ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 08 नवम्बर 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 08 नवम्बर 2015 से 14 नवम्बर 2015

का.कृ. –12 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 58, अंक 45, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

चम्बा (हि. प्र.) में हुआ नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज हि. प्र. के सुंयक्त तत्त्वाधान में डी.ए.वी. विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के लिए नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण दो दिवसीय कार्यक्रम 24 और 25 अक्तूबर 2015 को किया गया। हिमाचल प्रदेश के जोन V के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने इस शिविर के अन्तर्गत दो दिन तक नैतिक की शिक्षा के गुर सीखे।

मुख्यातिथि परम आदरणीय डॉ. पूनम सूरी जी व उनकी सहधर्मिणी जी ने राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चम्बा के परिसर में पवित्र वेद की वैदिक ऋचाओं द्वारा यज्ञ कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में डॉ. पूनम सूरी जी व उनकी सहधर्मिणी बने। इस अवसर पर सचिव आर्य प्रादेशिक सभा श्री.एस. के. शर्मा नई दिल्ली, प्रबंधक डी.ए.वी. चम्बा, श्रीमती स्नेह महाजन व उपप्रबंधक श्री के.के. महाजन जी उपस्थित रहे। डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के क्षेत्रीय निदेशक, प्रधानाचार्य एवं शिक्षक–शिक्षिकाएँ यज्ञ की पूर्णाहुति पर समूचे हिमाचल में संचालित डी.ए.वी. विद्यालयों से आए हुए प्रधानाचार्यों और शिक्षक–शिक्षिकाओं पर पुष्प वृष्टि कर प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए. वी. कॉलेज मैंनेजिंग कमेटी आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्य अतिथि ने नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण के प्रथम सत्र के उद्घाटन भाषण में संबोधित करते हुए देश भक्ति, प्रभु भक्ति पर ज़ोर देते हुए सत्य आहार, सत्य विचार, सत्य व्यवहार, सत्य आचार और सत्य आधार के बारे में विस्तार में बताया। जिसमें सत्य द्वारा नैतिकता का उपदेश देते हुए उन्होंने सभी को अपने जीवन में सत्य अपनाने का आह्वान किया। उनकी प्रभावशाली वाणी ने सभागार में उपस्थित सभी, को मंत्रमुग्ध कर दिया। मान्य प्रधान जी ने कहा कि आज देश चारों ओर ओर से चरित्र हीनता के दल–दल में फंसा हुआ है जिसके चलते नैतिक मूल्यों को जानने और समझने के नितान्त अवश्यकता है। डी.ए.वी 60,000 अध्यापकों पर यह उत्तरदायित्व आ गया है कि वे विमल मन वालों छात्रों नैतिकता का पाठ पढ़ाकर राष्ट्र कि प्रति समर्पित करें।

कार्यक्रम में डॉ. वागीश जी एवं महामहिम राज्यपाल के विशेष कार्याधिकारी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने मुख्यवक्ता के रूप में उद्‌बोधन दिया। डॉ. वागीश जी ने कहा कि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो समाज में रहता है। उन्होंने कहा कि समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए नैतिक मूल्यों का होना अति आवश्यक है। आजकल प्रत्येक माँ–बाप अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजिनीयर या वैज्ञानिक बनाने की चाह रखता है। इसी होड़ में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। जोकि समाज के लिए बहुत घातक है। डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का प्रथम कर्त्तव्य है कि वे बालक को सही अर्थों में नैतिकता का पाठ पढ़ाकर मनुष्य बनाएँ। नैतिकता शिक्षा प्रशिक्षण के अन्तिम सत्र में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने अपना उद्‌बोधन दिया। उन्होंने नैतिक शिक्षा के महत्त्व पर विशेष बल देते हुए शिक्षक–शिक्षिकाओं को मूल्याधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित किया। मूल्यों के बिना बालक का विकास संभव नहीं है। प्रतिभा, व्यवहार, वातावरण बालक को मानव बनाने में सहायक तो हैं, परन्तु इस विषय में दिशा देना प्रशस्त शिक्षक एवं माता–पिता का ही कार्य है।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम क्षण में '**अग्निना अग्नि समिध्यते** (ऋ.1/12/6) ज्योति से ज्योति दीप्त होती है, दीप से दीप जलाओ एक अन्धकार पराभूत हो जायेगा', यह शिक्षा दी। आइए! हम दीप से दीप जलाते हुए, दीपमाला बन ज्योतित हों और इस समाज को भी ज्योतित करें।

दीपावली की शुभकामनाएँ

–सम्पादक

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल लारेंस रोड ने स्वामी विरजानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर ने स्वामी दयानन्द जी के प्रख्यात गुरु स्वामी विरजानन्द जी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की। विद्यार्थियों ने स्वामी विरजानन्द जी के प्रेरणा देने वाले जीवन पर चर्चा की। प्राचार्या ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ''इस महान और धर्मनिष्ठ सन्त ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर बहुत प्रेरक प्रभाव डाला। यह माना जाता है कि स्वमी विरजानन्द जी के बिना दयानन्द जी का जीवन उत्कर्ष को प्राप्त नहीं कर पाता और न ही दयानन्द जी के बिना वैदिक धर्म का पुनरुत्थान हो पाता। स्वामी विरजानन्द जी मथुरा के एक अंधे सन्त थे, जिनका जन्म 1778 ई. में एक ब्राह्मण परिवार में जालंधर के पास हुआ। पाँच वर्ष की कोमल अवस्था में इन्होंने चेचक रोग हो जाने के कारण अपनी आँखों की रोशनी खो दी, और आयु का बाहरवां वर्ष पुर्ण होने से पूर्व ही इनके माता–पिता की मृत्यु हो गई। इस अनाथ बालक ने जल्दी ही अपना घर छोड़ दिया और ऋषिकेश के लिए प्रस्थान किया। फिर हरिद्वार जाकर कठोर अनुशासन तथा चिंतन करते हुए अपना जीवन यापन करना प्रारंभ कर दिया। मथुरा जाकर कठोर अनुशासन तथा चिंतन करते हुए अपना जीवन यापन करना प्रारंभ कर दिया। स्वामी विरजानंद जी ने स्वामी दयानंद जी को जीवन के सच्चे अर्थ और वेदों के आंतरिक तथा छिपे हुए स्वरूप के बारे में बतलाया और कहा, वेदों के सच्चे ज्ञान को सत्य के प्रकाश द्वारा इस जगत् में फैलाओ और इसे प्रकाशमान करो।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार 08 नवम्बर, 2015 से 14 नवम्बर, 2015

अविवेकी जन डूब जाते हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मि वेना अनूषत, इयक्षन्ति प्रचेतसः।
मज्जन्त्यविचेतसः।।

ऋग् ९.६४.२१

ऋषिः **काश्यपः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(वेनाः)** प्रभु–प्रेमी मेधावी जन, **(अभि अनूषत)** अभिमुख होकर **(पवमान सोम प्रभु की)** स्तुति करते हैं। **(प्रचेतसः)** प्रकृष्ट चित्तवाले विवेकी जन, **(इयक्षन्ति)** यज्ञ करने का संकल्प करते हैं। **(अविचेतसः)** अविवेकी जन, **(मज्जन्ति)** डूब जाते हैं।

● सोम प्रभु पवमान हैं, जग को पवित्र करने वाले हैं। जो मलिनता संसार में कई कारणों से उत्पन्न होती है उसे विविध साधनों से पवित्र करनेवाले सोम प्रभु यदि न होते तो मलिनता इतनी बढ़ जाती कि प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जाता। वे मानव के हृदय को भी पवित्र करनेवाले हैं, परन्तु उन्हीं के हृदय को पवित्र कर सकते हैं जो अपना हृदय पवित्र होने के लिए उन्हें देते हैं। प्रभु–प्रेमी मेधावी जन सोम प्रभु के अभिमुख हो उनके प्रति प्रणत होते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनकी पावनता का गुणगान करते हैं, उन्हें आत्म–समर्पण करते हैं। परिणामतः वे 'प्रचेताः' बन जाते हैं, उनका चित्त प्रकृष्ट, पवित्र, ज्ञानमय और विवेकयुक्त हो जाता हैं। 'प्रचेताः' मनुष्य दीर्घद्रष्टा होते हैं। जिस यज्ञ को अन्य लोग निरर्थक समझते हैं, उन्हें वही प्यारा होता है। वह अपने जीवन में यज्ञ करने का संकल्प लेते हैं। वे सोम–यज्ञ करते हैं, सोम प्रभु के नाम से यज्ञ में आहुतियाँ डालते हैं, 'सोम' प्रभु का भजन–कीर्तन करते हैं और उससे प्रेरणा पाकर स्वयं भी साक्षात् 'सोम' बन जाते हैं। उनके जीवन में सोम–सदृश रसमयता, मधुरता और पावनता आ जाती है। 'सोम' के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए वे अन्य यज्ञों का भी आयोजन करते हैं। 'सोम' प्रभु पावनता के यज्ञ को चला रहे हैं, वे भी समाज को पावन करते हैं। 'सोम' प्रभु सृष्टि–यज्ञ चला रहे हैं, वे भी सर्जनात्मक कार्यों को करते हैं। 'सोम' प्रभु पालन–पोषण और पूर्ति का यज्ञ कर रहे हैं, वे भी निर्बलों का पालन करते हैं, अपुष्टों को पुष्टि देते हैं, अपूर्णों के दोषों को दूर कर उनके छिद्र भरते हैं। यज्ञमयी नौका पर चढ़कर वे भव–सागर से पार हो जाते है। परन्तु जो 'अविचेताः' हैं, अविवेकी हैं, अल्पदर्शी हैं, वे न 'सोम' प्रभु का स्तवन करते हैं, न यज्ञ करते हैं। परिणामतः वे भव–सागर में डूब जाते हैं और दुर्गति पाते हैं।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भक्त और भगवान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी बता रहे थे कि वासना का सीधा अर्थ जो बस जाये। जैसी भावना वैसा फल, जैसा फल वैसी भावना। मस्तिष्क में जिस प्रकार याद की लकीर बन जाती है, इसी प्रकार सूक्ष्म शरीर में वासना की लकीर बैठ जाती हैं। वासना चित्त क्या है ? प्रकृति का पहला रूप जिसको अस्मिता, कहते हैं। इस अस्मिता से अहंकार उत्पन्न हुआ। अहंकार में और गति हुई, तब चित्त बना। प्रकृति, अस्मिता, अहंकार और चित्त, यह सब जड़ हैं।

इस चित्त की पॉच अवस्थायें हैं– क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र और निरुद्ध। चित्त का पहला स्वभाव है 'प्रख्या'। दूसरा स्वभाव है 'प्रवृति'। तीसरा स्वभाव है 'स्थिति'।

हमारे ऋषि मुनियों ने लोगों को जाप करने को कहा। भगवान के किसी नाम को बार बार याद करो। ओ३म् का जाप करो। उपनिषद् कहता है कि ईश्वर का कोई रूप नही, कोई रंग नहीं, इसलिए ओ३म् के रूप में उसे भृकुटि में देखने का यत्न करो। चलते–फिरते, उठते–बैठते, हर समय 'ओ३म् 'तत्सत्' लगातार कहते जाओ। चित्त को रोकने का सरल उपाय है। निरन्तर अभ्यास करने से वह रुकता है।

अब आगे...

परन्तु चित्त का वर्णन तो हो रहा था वासना के कारण, जो प्रभु–दर्शन के मार्ग में सबसे पहली रुकावट है। दूसरी रुकावट जिस पर कल विचार कर रहे थे, क्रोध है। मैंने जहाँ यह कहा कि क्रोध सबसे बड़ी रुकावट हैं। वहाँ यह भी कहा कि कई अवस्थाओं में क्रोध उचित और आवश्यक भी है। सरदार पटेल के क्रोध की चर्चा मैंने की, जिससे हैदराबाद में बैठे हुए निजाम साहब के होश ठिकाने आ गये। अब एक और क्रोध की बात सुनिये!

महाराजा रणजीतसिंह के जनरल सरदार हरिसिंह नलवा कश्मीर में थे। जब उन्हें महाराज का सन्देश मिला कि पठानों की फौजें अटक के उस पार आ गईं, वहाँ पहुँचो, उन्हें हटाओ, तो सरदार हरिसिंह नलवा तेजी के साथ कश्मीर से अटक की ओर बढ़े। गढ़ी हबीबुल्ला के मार्ग से एबटाबाद की ओर बढ़ रहे थे कि 'दोमेल' के निकट रहने–वाले पठानों ने मार्ग देने से मना कर दिया। नलवा ने कहा, "तुम चाहते क्या हो? तुम्हारे साथ मुझे लड़ना नहीं।" पठानों ने कहा, "लड़ना हम भी नहीं चाहते। परन्तु हमारी कुछ शर्ते हैं उन्हें माने बिना आप आगे नहीं जा सकते।" सरदार हरिसिंह नलवा ने सारी बात को मज़ाक समझा; पूछा, "क्या शर्तें हैं? पठानों ने कहा, "आज शाम को हम आपस में फैसला करके बतायेंगे। नलवा जी ने कहा, "कोई बात नहीं, आप शाम को बताइये, हम कल चले जायेंगे।" परन्तु जिस बात को हरिसिंह नलवा ने मज़ाक समझा था वह उसके लिए समस्या बन गई। शाम हो गई, कोई शर्त बताई नहीं गई। दूसरे दिन भी शर्तें तय नहीं हुईं, तीसरे दिन भी नहीं हुईं। पठान मार्ग रोके खड़े थे। नलवा जी उनसे बिना लड़े आगे बढ़ना चाहते थे। समय व्यतीत हुआ जाता था। शर्तों का निर्णय होने में नहीं आता था। हरिसिंह चकित थे– करें तो क्या करें ? एक रात वे सो रहे थे तो ठप–ठप की आवाज सुनकर जाग उठे। पास खड़े पहरेदार से उन्होंने पूछा, "यह आवाज कैसी है?" पहरेदार ने कहा, "सरकार, सब लोग अपनी छतों पर चढ़कर मिटटी को कूट रहे हैं। इस प्रदेश की मिटटी ही ऐसी है कि कूटे–पीटे बिना ठीक नहीं रहती।" हरिसिंह एकदम चौंक उठे, बोले, "क्या कहा तुमने? एक बार फिर कहो तो !" पहरेदार ने कहा, "सरकार इस इलाके की मिटटी ही ऐसी है, कूटे–पीटे बिना दुरुस्त नहीं होती।"

नलवा जी हँसकर बोले, "यह मेरी ही गलती थी कि इस मिट्टी की विशेषता को मैं समझ नहीं पाया।" सेना को आज्ञा दी, "इसी समय पठानों पर आक्रमण कर दो। जहाँ जो मिले, उसको वहीं पीट डालो!," थोड़ी देर में चारों ओर मारपीट होने लगी। प्रातःकाल होने से बहुत पहले कितने ही पठान गर्दनों में पल्लू डाले उनके पास आये। हरिसिंह गरजकर बोले, क्या चाहते हो ?" पठानों ने सिर झुकाकर कहा, "कुछ नहीं श्रीमान! हरिसिंह बोले, "क्या शर्तें हैं तुम्हारी?" पठानों ने कहा, "सरकार, कोई शर्तें नहीं । मार्ग साफ है, आप जाइये, कोई आपको रोकेगा नही।" यह है ठीक और उचित क्रोध जो घर से बाहर देश की रक्षा के लिए, उसकी स्वतन्त्रता के लिए और धर्म की रक्षा के लिए किया जाए। यह क्रोध आत्म–दर्शन के मार्ग में रुकावट नहीं। आत्म–दर्शन के मार्ग में रुकावट है वह क्रोध, जो घर में किया जाये, स्वार्थ के लिए किया जाये। ऐसा क्रोध घर का, परिवार का, जाति का, देश का, सबका

नाश कर देता हैं। ऐसा क्रोध बुद्धि को नष्ट करता है। बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश होता है–

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।

विनाश का समय जब आता है, तब बुद्धि मारी जाती है। यह क्रोध ही वह सुरा या शब है जो भक्त और भगवान् के मध्य दीवार बनके खड़ी हो जाती है।

आज एक माँ कहने लगी, "आप घर में क्रोध न करने की बात कहते हैं परन्तु करें क्या ? बच्चे जब शैतानी करते हैं तो क्रोध आ ही जाता है।" मैने उन्हें हँसकर कहा, "माँ ! बच्चे ने शैतानी की, आपने क्रोध किया। तब दोनों में अन्तर क्या हुआ ? देखो, मैं बच्चों की वकालत नहीं करता। मैं भी तो आखिर पिता रहा हूँ, दादा रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि बच्चा ऊधम मचाता है। परन्तु उसके स्वभाव को सुधारने का उपाय यह नहीं कि क्रोध में आकर आप लट्ठ लेकर उसके सिर पर सवार हो जायें। ऐसा करने से उसका स्वभाव सुधरेगा नहीं। उसमें विरोध की भावना जाग उठेगी। इसलिए जब वह शरारत करे तब उसे कुछ मत कहिये। जब क्रोध शान्त हो जाय तब प्यार से उसको समझाइये, सुन मेरे पप्पू! मेरे गप्पू! देख, उस समय तूने शैतानी की, इससे इतनी हानि हो गई। यह घर तेरा भी तो हैं। यह तेरी ही हानि है। आगे ऐसी गलती न करना ! तब उसकी आँखे नीची हो जायेंगी। उसके हृदय में पश्चात्ताप उत्पन्न होगा, वह सुधरने लगेगा। यदि आप क्रोध में आकर मारपीट से काम लेंगे तो वह रोयेगा अवश्य, चिल्लायेगा भी , सुधरेगा नहीं।' (1. पूज्य स्वामी जी का यह उपदेश केवल दूसरों के लिए नहीं। वे मेरे पिता हैं। मैने देखा कि इस उपदेश पर उन्होंने स्वयं आचरण भी किया। छोटा –सा था। लाहौर के डी. ए. वी. स्कूल में पढ़ता था। स्कूल के हैड–मास्टर ने मेरे एक मित्र को उसकी त्रुटि पर मारा। मैंने अनुभव किया कि उन्होंने मेरे मित्र को आवश्यता से अधिक और अनुचित मारा है। लिखने की रुचि मुझे बचपन से है। स्कूल में ही बैठकर एक पत्र मैंने हैडमास्टर साहब को लिखा। अपने हृदय की सारी भड़ास उसमें निकाल डाली। इतना तीखा पत्र था कि उसके पढ़ने के पश्चात् हैडमास्टर साहब को नींद नहीं आई होगी। उन्होने मुझे तो कुछ नहीं कहा। उस पत्र को अपने एक शिकायती पत्र के साथ पिताजी के पास भेज दिया। अपने पत्र में लिखा कि "आर्यसमाज के इतने बड़े नेता का पुत्र यदि इस प्रकार घृष्टता करे और स्कूल के अनुशासन को भंग करे तो फिर आर्यसमाज का यह स्कूल चलेगा कैसे ?" मुझे पता नहीं कि हैडमास्टर महोदय ने मेरे सम्बध में मेरे पिताजी को पत्र लिखा हैं मैं स्कूल से घर गया तो पिताजी के उस कमरे के निकट से निकलकर ऊपर जाने लगा जो सीढ़ियों के पास था। प्रायः मैं दरवाजे में खड़ा होकर पिताजी को नमस्ते करता था। वे प्यार से पूछते थ, "क्या हाल हैं?" मैं कहता "अच्छा" और ऊपर जाता। प्रायः वे मुझे बीरम कहते थे। उनके अधिक प्यार मैंने और भी कहीं पाया है, ऐसा मुझे याद नही पड़ता। परन्तु उस दिन मैं द्वार के पास पहुँचा तो उन्होने बीरम कहकर नहीं बुलाया। रणवीर भी नहीं कहा। मेरी ओर देखे बिना बोले, "आइये, रणवीर जी!" मैं इस 'आइये' और 'जी' को सुनकर घबराया। वे बोले, "अन्दर पधारिये! " मैं और भी घबराया। वे कुर्सी उठाते हुए बोले, "यहाँ विराजिये!" मेरे लिए यह 'पधारना' जंजाल बन रहा था। मेरे बैठने पर उन्होंने कहा, " आप अंग्रेजी तो पढ़ सकते है? " मैंने कहा, "जी, कुछ–कुछ पढ़ सकता हूँ। " वे बोले, "तो इस पत्र को देखिये। " और उन्होंने हैडमास्टर महोदय का पत्र मुझे दे दिया । मैंने उसे पढ़ा। वे बोले, "पढ़ लिया आपने ?" मैंने धीरे से कहा, "जी। " वे बोले, " कुछ लज्जा आई ? " मैंने सिर झुकाकर कहा, " जी। " वे बोले, " तो जाओ, आगे से ऐसी बात न करना। " मैं चला आया, परन्तु इस बात को आज तक भूल न पाया। क्रोध का सबसे अधिक व्यवहार जो उन्होंने मेरे साथ केवल उस समय किया, जीवन–भर में इतना कभी भी नहीं किया।

(रणवीर)

मैं पिछले दिनो करौलबाग के एक सज्जन मेरे पास आयेः बोले,"मेरे बच्चे मेरा सम्मान नहीं करते, मेरी बात भी नहीं मानते, आप चलकर उन्हें समझाइये। " मैं उनके घर गया। बच्चो से वार्तालाप किया तो ज्ञात हुआ कि ये महोदय गालियाँ बहुत निकालते हैं, सारा घर उनकी गालियाँ से तंग है। उनके बच्चों ने बताया कि "गालियाँ दिये बिना उन्हें भोजन नहीं पचता, तब उनकी बात सुने कौन ?" नहीं, इस प्रकार बच्चे सुनते नहीं, समझते नहीं। उन्हें समझाना है तो प्यार से समझाइये। उनके हृदय को अपील कीजिये। एक विधि और भी सुनिये! आपके बच्चे को कोई बुरी आदत है तो जब वह सो रहा है तब प्यार से

उसके मस्तिष्क पर हाथ रखकर कहिये, "देख बच्चे! तेरा यह स्वभाव ठीक नहीं, इसे छोड़ दे।" बार–बार यह बात कहिये। धीरे–धीरे उसका प्रभाव होगा। प्रभाव होने का कारण यह है कि यद्यपि बच्चा सोया हुआ है परन्तु उसका मन जाग रहा है। बार–बार कहने से आपकी आवाज उसके मन में जाकर बैठ जाएगी। स्वयं उसका मन उसके स्वभाव के विरुद्ध प्रेरणा देगा और आदत छूट जाएगी। अमेरिका में इस बात का परीक्षण किया गया। एक छात्रावास में जहाँ बहुत छोटे बच्चे रहते थे, एक अध्यापिका ने देखा कि एक बच्चे को नाखून चबाने की आदत है। एक–दो बार उसने कहा, बच्चे का स्वाभाव नहीं बदला। तब उसने यह विधि अपनाई। बच्चा सो गया तो वह उसके पास बैठ गई। धीरे से बोली, "देख बच्चे, तू तो बहुत अच्छा है, बहुत गुण हैं तुझमें परन्तु तेरी यह नाखून चबाने की आदत अच्छी नहीं। इसे छोड़ दे तो तू बहुत अच्छा हो जाये। देख! तू इस आदत को छोड़ दे।" एक बार यह बात उसने कही, सौ बार कही, दो सौ बार कही। प्रातःकाल वह बच्चा उठा तो उसकी आदत समाप्त हो चुकी थी । उसके पश्चात् उसने कई दूसरे बच्चों पर परीक्षण किया जिन्हें दूसरी बुरी आदतें थीं। प्रत्येक बार उसे सफलता मिली।

यह बात आपको इसलिए सुनाता हूँ कि अंग्रेज् के चले जाने पर भी हमारे देश से अंग्रेजियत नहीं गई। यूरोप और अमेरिका के लोग जब तक किसी बात को न कहें, तब तक हमें वह ठीक प्रतीत नहीं होती। वैसे यह उपाय बिल्कुल भारतीय है; परन्तु आप भारतीय करके मानिये या अमेरिकन करके, अपने बच्चे पर क्रोध मत कीजिये। घर में क्रोध न कीजिये। अपने कल्याण के लिए क्रोध न कीजिये। यह क्रोध प्रभु–दर्शन में सबसे बड़ी रुकावट है। सारे जप–तप–अभ्यास का यह नाश कर देता है। वेद ने इसे 'विभेदक' कहा तो अकारण नहीं। वस्तुतः यह बहुत भयानक है। साधना के सारे महल को जलाकर यह राख कर देता है।

शेष अगले अंक में....

"रावण–दहन"

● साध्वी डॉ. उत्तमायति

हम भारतीय अपनी परम्पराओं को निभाने या कहूँ कि ढोने में बड़े कटिबद्ध हैं। दशहरा आ रहा है, जगह जगह रावण के पुतले बनेंगे और *उनका दहन होगा। कभी सोचा है कि* ये उचित है या अनुचित। एक अत्यन्त बलशाली, प्रकाण्ड, पण्डित शिव भक्ति, बस यही कसूर था ना उसका कि उसने सीता का हरण किया था छल पूर्वक। पर क्यों किया था इस पर कभी विचार किया है–हाँ अपनी बहिन की बेइज्जती का बदला लेने के लिए ही ना । आज कितने भाई हैं जो अपनी बहनों की बेइज्जती का बदला लेते हैं ? कितने रावण हैं जो पराई स्त्री का अपहरण तो करते हैं, लेकिन 14 वर्ष तक अपने घर में रख कर भी उसे छूते तक नहीं?

कहबे दशहरा सत्य की असत्य पर विजय है, नहीं आज के संदर्भ में तो असत्य पर घोर असत्य की विजय है। रावण ही जलाने का इतना शौक है तो आज तो गली–गली घर– घर दफ्तर, चौराहों यहाँ तक कि धार्मिक स्थलों पर भी जीते जागते रावण घूम रहे हैं, जो राह चलती सीताओं की लाज सरे आम लूट रहे हैं, उन्हें जलाओ। मुझे पता है पुतले जलाना बहुत आसान है, क्योंकि वो प्रतिरोध तो कर नहीं सकता, जीवित रावणों को जलाना तो दूर की बात हाथ तो लगा कर देखो, उसी समय गोलियों से भून दिए जाओगे या जेल की सलाखों के पीछे कर दिए जाओगें। इन रावणों के तो गले में फूलों के हार डाले जाते हैं–मंचों पर उनकी जय जयकार होती है।

आज सरे आम सीताएँ लुट रही हैं, उनकी लाज, आन बान सबकी धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। आप मुझे एक दिन का ऐसा अखबार बता दें, जिस दिन बलात्कार की कोई घटना ना छपी हो। अरे रावण को जलाने वालों उन रावणों का क्या होगा जो चार चार साल की मासूम बच्चियों के साथ कुकृत्य करते हैं, और मारकर जंगलों में छोड़ आते हैं। उन रावणों का क्या करोगे–जो नौकरी देने के बहाने इज्जत लूटते हैं, अस्पताल डाक्टर व अन्य कर्मचारी मरीज तक को नहीं छोड़ते। घर में रिश्तों को कलंकित करते, ससुर, देवर, मामा, चाचा, ही जब रावण का रूप धारण कर लेते हैं। चुप क्यों हैं? है कोई जबाब ? न सरकार के पास इन बातों के लिए समय है न जनता के पास बताइये आज तक किस बलात्कारी को ऐसा कठोर दण्ड दिया गया है कि दूसरा व्यक्ति ऐसा कुकृत्य करते हुए दस बार सोचे। अरे! एक तो ऐसा रावण जला दो किसी दशहरे पर पुतले को नजदीक से देखना चाहा, जब वहाँ पहुची तो देखा पुतले की आंखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। मैं आश्चर्य चकित हो पूछती हूँ, तुम रो रहे हों–क्या मृत्यु का भय सता रहा है? मैंनें तो पढ़ा है कि जब तुम सचमुच राम के हाथों मारे जा रहे थे अट्टहास कर रहे थे, मुख पर अपार प्रसन्नता थी, सन्तोष था, फिर आज ये अश्रुधारा ? रावण बोला–हाँ उस दिन मैं मर रहा था, एक असीम आनन्द था कि मुझे मारने वाला कोई और नहीं स्वयं भगवान राम है–मेरी मृत्यु उनके हाथों हो जाएगी, शायद मेरे सभी पापों का अन्त हो जाएगा, मेरी सद्गति हो रही है, शायद मोक्ष प्राप्त हो जाए बस यही सोच सोच कर मैं आनन्दित था। परन्तु हाय ये अश्रुधारा, अब इसलिए है कि उसके बाद हर वर्ष ये रावण राम के हाथ न मर रावणों के हाथों ही मारा जाता है।

रावण के चरित्र का पता बाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड के 20/? श्लोक से मिलता है– रावण सीता से कहता है–"एव चैवमकामा त्वां न च स्प्रक्ष्यामि मैथली" हे सीता ! तू मेरे प्रति काम भाव न रखती है तो मैं तुझे स्पर्श नहीं कर सकता।

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

परिवार की खुशहाली में महिलाओं की भागीदारी

● हरिश्चन्द्र आर्य

परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है। भारत में परिवार की महत्ता विश्व के अन्य देशों में कहीं अधिक है। भारत में स्त्री को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है तथा स्त्री को पुरुष की अर्द्धांगिनी कहा जाता है। मनु ने स्त्रियों की महत्ता को बताते हुए कहा है कि " जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। जहाँ स्त्रियाँ तंग की जाती हैं, दुःखी की जाती हैं, वहाँ परिवार बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं। परिवार में स्त्रियों को उच्च स्थान प्रदान करना भी भारतीय परिवार की विशेषता है।

परिवार विशेष रूप से भारतीय परिवार एक ऐसी संस्था है जिसमें सभी सदस्य पारस्पारिक सहयोग से कार्य करते हैं और यही एक सुखी, समृद्ध और खुशहाल परिवार का आधार है। परिवार की सर्वांगीण समृद्धि और खुशहाली की प्रक्रिया में नारी एक केन्द्रीय शक्ति की भूमिका निभाती है। खुशहाली अर्थात सुख एवं समृद्धि किसी भी परिवार में तभी आ सकती है जब वहाँ नारी स्वस्थ एवं प्रसन्न होगी। सुखी परिवार के लिए शारीरिक मजबूती भी आवश्यक है। सुखी परिवार की एक जरुरी शर्त है– स्वस्थ परिवार। इसकी जिम्मेदारी घर को चलाने वाली महिला पर आ ही जाती है। बच्चों का उचित लालन–पालन, बड़ों की देखभाल आदि, सभी जिम्मेदारियाँ परिवार की महिला को ही वहन करनी होती हैं।

स्वस्थ रहना जिन्दगी की पहली शर्त है

परिवार में पारिवारिक सामंजस्य का केन्द्र भी महिला है। भारतीय परिवार में पत्नी या माता का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवार में गृहिण ी को पत्नी, माता तथा गृहस्वामिनी के रूप में अलग–अलग भूमिका निभानी पड़ती है तथा समायोजन स्थापित करना पड़ता है। गृहस्थ जीवन में आने वाले उत्कर्ष और अपकर्ष में नारी की भूमिका का कोई विकल्प नहीं है। पत्नी के उपरान्त महिला माता भी बनती है तथा उसे परिवार में माता के रुप में भी भूमिका निभानी पड़ती है। नारी के बिना अधूरा है परिवार। माँ के कर्तव्य बच्चे के पैदा होने से पहले ही शुरु हो जाते हैं। माँ जो भी सोचती है महसूस करती है, जैसा दिन–प्रतिदिन व्यवहार करती है, सभी बच्चे के शारीरिक व मानसिक विकास को प्रभावित करता है। बच्चे के जन्म के पश्चात माँ के कर्तव्य और भी अधिक बढ़ जाते हैं। एक आदर्श माँ ही बच्चे के लालन–पालन का सही तरीका जानती है। बच्चे के बोलने से पहले ही माँ को उसकी जरुरतों का एहसास हो जाता है। जैसे –जैसे बच्चा बड़ा होता है उसकी शिक्षा भी माँ की गोद से ही शुरू हो जाती है। माँ ही बच्चे की प्राथमिक शिक्षिका है। इस अवस्था में जो भी बच्चा सीखता है वही उसके जीवन का हिस्सा बन जाता है। माँ एक समझौता करने वाली आत्मा है। वह अक्सर पति का ध्यान भी बच्चों की तरफ आकर्षित करती है। कमी–कमी पिता के क्रोधित होने पर माँ उस क्रोध को शांत करती है ताकि उसके परिवार का वातावरण शांत रहे और परिवार खुशहाल रहे। माँ एक पालक–पोषक, मार्गदर्शक और मित्र है। माँ निःस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य निभाती चली जाती है। उसकी केवल एक इच्छा होती है कि उसका पूरा परिवार दिनों–दिन तरक्की करे खुशहाल रहे।

एक जमाना था जब महिलाओं की स्थिति केवल रसोई तक सीमित थी, आज महिलाओं ने परिवार की बागडोर अपने हाथ में लेली है जिससे एक सुखद परिवर्तन आया है। यह मान्यता काफी पुरानी है कि परिवार को चलाने की जिम्मेदारी केवल पुरुष की है। पिछले बीस सालों में हमारे समाज में कई तब्दीलियाँ आई हैं। कई सामाजिक बेड़ियाँ कमजोर हुई है, कई टूटी है। इसका नतीजा काफी सकारात्मक रहा। शिक्षा का जमकर प्रसार हुआ। हमारे समाज में पारिवारिक रिश्तों में बड़ा भारी बदलाव आया है। आज से दो दशक पहले तक यह माना जाता था कि बच्चों को कड़े अनुशासन में रखना चाहिए तभी वे जिंदगी में आगे बढ़ सकते हैं। बच्चों को अनुशासित रखने की जिम्मेदारी पिता की होती थी। पिता के घर में आते ही कर्फ्यू का सा माहौल हो जाता था। माँ डरी सी, सहमी सी रसोई में लगी रहती। लेकिन अब माँ रसोई तक ही सिमटी नहीं रह गई है। वह अब बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास की ओर सजग हो गई है। शिक्षित और जागरूक होने के कारण माँएँ बच्चों की भावनात्मक जरूरतें बेहतर तरीके से समझ पाती हैं। जैसे बच्चों को हर विषय पर सलाह देना, बात करना, उम्र के अनुसार उनकी हर छोटी बड़ी समस्या का हल निकालना। महिला के जागरूक होने से परिवार की खुशहाली पर प्रत्यक्ष प्रभाव तो पड़ता ही है। परिवार की स्त्री के एक गृहस्वामिनी के रूप में मुख्य कर्तव्य हैं। अपने व्यवहार से सभी संबंधियों को सन्तुष्ट रखना, ससुराल के संबंधियों के प्रति सम्मान एवं स्नेह का व्यवहार करने से परिवार का वातावरण सौहार्दपूर्ण बना रहता है। एक गृहस्वामिनी के रूप में स्त्री घर के विभिन्न कार्यो की व्यवस्था करती है।

परिवार में गृहिणी को बहुपक्षीय भूमिका निभानी पड़ती है। वर्तमान में अनेक नगरीय परिवारों में महिलाएँ गृह दायित्वों के साथ–साथ कुछ व्यवहारिक दायित्व भी निभाने लगी हैं। अनेक महिलाएँ किसी ने किसी व्यवसाय से भी सम्बद्ध होने लगीं हैं। वे या तो नौकरी करती हैं अथवा कोई अपना व्यवसाय करती हैं। इस स्थिति में उन्हें दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी बढ़ जाने पर भी स्त्री के पारिवारिक दायित्व कम नहीं होते। अतः वर्तमान में सामंजस्य और संतुलन बनाने में नारी की भागीदारी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। परिवार की एकता, प्रगति एवं समृद्धि में गृहिणी का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गृहिणी का दायित्व है कि वह परिवार के सदस्यों में किसी प्रकार का भेदभाव या पक्षापात न करे। प्रत्येक सदस्य को यथोचित सम्मान एवं स्नेह दे तथा उनकी सुविधाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रसास करे। इसके अतिरिक्त गृहिणी का दायित्व है कि वह परिवार के प्रत्येक सदस्य की सुविधा एवं कार्यक्षमता तथा रूचि को ध्यान में रखकर गृह कार्य सौंपे। कोई भी समझदार गृहिणी ऐसा दृष्टिकोण अपनाकर परिवार की एकता को बनाए रख सकती है। परिवार की महिला की इस महत्त्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए ही महिला को परिवार की धुरी कहा जाता है। परिवार का सम्पूर्ण अस्तित्व नारी की मजबूत इच्छा शक्ति पर आधारित है। बिना नारी के गृह की कल्पना भी नहीं की जा सकती कहा जाता है कि–ईंटों से मकान बनता है और परिवार के सदस्यों से घर बसता है, और नारी इस घर की नीव है। जिस पर संस्कारों और सदाचरण से युक्त सदस्यों के स्तंभ और खुशहाल परिवार की मजबूत इमारत खड़ी रहती है।

नारी और पुरूष दोनों गृहस्थी की गाड़ी के दो पहिए हैं। प्राकृतिक रूप से नारी को संस्कार भावना और संवेदना की शक्ति अधिक मिलती है। सहिष्णुता और सामंजस्य की क्षमता अधिक प्रदान की गई है। यही कारण है कि पारिवारिक समृद्धि और खुशहाली में नारी की भागीदारी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अधिष्ठता, उपदेश विभाग, प्रचार कार्यालय
मौ0 काली पगड़ी, अमरोहा05925–263422

☞ पृष्ठ 03 का शेष

"रावण–दहन"

क्योंकि धर्म शास्त्रों में बन्ध्या, रजस्वला, अकामा आदि स्त्री का स्पर्श करने का निषेध है। आज! बलपूर्वक अपहरण कर रोती चिल्लाती मासूम कन्याओं के साथ दुराचार व अनाचार हो रहे हैं।

स्वयं हनुमान के मुख से 'बा. रा. सुन्दर. 20/6' में कलाते हैं कि रावण में गुण अनेक थे केवल अधर्म बलवान था–

'अहोरूपमहो धैर्यमहो कान्तिरहो द्युतिः।
अहोराक्षस राजस्य सर्व लक्षण युक्तता।।
यद्य धर्मो न बलवान् स्यादयं राक्षसेश्वरः।
स्यादयं सुर लोकस्य सशक्रस्यापि रक्षिता।।

रावण को देखते ही हनुमान मुग्ध हो जाते हैं और कह उठते हैं अहो रावण का रूप सौन्दर्य, अहो धैर्य, अहो कान्ति, सर्वलक्षण युक्त होना। यदि इसमें अधर्म बलवान न हो तो यह इन्द्र सहित देव लोक का भी स्वामी बन जाता।

हम राम को अपना पूज्य मानते हैं लेकिन उनके गुण को धारण नहीं करना जानतें। रावण के मृत्यु के पश्चात् राम विभीषण से कहते हैं कि अपने भाई के अंतिम संस्कार की तैयारी करो। तब विभीषण बोले–राम! मैं इस परस्त्री लम्पट का संस्कार नहीं करूँगा, क्योंकि दुराचार के कारण मेरा भाई होने पर भी वह मेरा शत्रु है, मैंने उसका संस्कार किया तो लोग मेरी निन्दा करेंगे। राम ने बहुत ही सुन्दर उत्तर दिया– यद्यपि रावण अधर्मी था, लेकिन फिर भी बली व प्रसिद्ध था, तुम्हें इसका संस्कार अवश्य करना चाहिये, क्योंकि बैर भाव सिर्फ व्यक्ति जब जीवित होता है तभी तक होता है– मृत्यु पश्चात् हमारा कार्य पूर्ण हो गया, अतः अब कोई राग द्वेष नहीं है, तुम इसका संस्कार से यश ही प्राप्त करोगे।

"चितां चन्दन काष्ठश्च पद्मकोशीर चन्दनैः।
ब्राह्य यासंवर्त यामा सूरांक वास्त रणावृताम्।
वेदिं च दक्षिणा प्राचीं यथास्थानं च पावकम्।
पृषदाज्येन सम्पूर्ण स्त्रुवं स्कंधे प्रचिक्षिपुः।।"

राम के आदेश से लंका जाकर पूर्ण वैदिक रीति से चन्दन आदि की काष्ठ, सुगन्धित औषधि युक्त सामग्री, घृत, अग्निहोत्र कराने वाले याज्ञक ब्राहमणों द्वारा, राजाओं के योग्य पालकी में बड़े ही राजकीय सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार किया। जिसे सर्वोत्तमं पितृमेघ कहा जाता है।

हम राम को अपना आदर्श मानते हैं, जब कि स्वयं वो कह रहे हैं कि मरणोपरान्त कोई द्वेष बाकी नही रहता। और हम हजारों वर्ष बाद उसी द्वेष की अग्नि जला रहे हैं और हर वर्ष रावण दहन कर रहे है।

बस मेरा तो यही निवेदन है कि मारना ही है तो जीवित घूम रहे घोर पापी दुराचारी, लम्पट, रावणों का वध करके, भारत भूमि पर राम राज्य कायमं करो। हम अपने भीतर के रावण का भी वध करें। एक बार फिर आर्यावित्त की स्थापना का स्वप्न साकार करें – यही कामना है कि सुख सब और शान्ति का जीवन यापन करें।

09672286863

आर्य जगत् के वार्षिक तथा आजीवन शुल्क में परिवर्तन

आर्य जगत् 'साप्ताहिक पत्र के प्रकाशन की बढ़ती हुई लागत को देखते हुए सभा ने निर्णय लिया है कि आर्य जगत् 'साप्ताहिक पत्र का सत्र 2015–2016 से वार्षिक शुल्क रू. 125/– और आजीवन सदस्यता शुल्क 1,100/– किया जाये और इसे तुरन्त प्रभाव से लागू किया जाये। अतः पाठकों से अनुरोध है कि अपना वार्षिक शुल्क रू. 125/– एवं आजीवन सदस्यता शुल्क रू. 1,100/– की दर से भिजवायें।

मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

उत्कृष्ट शंका समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– ईश्वर ने मनुष्य को कैसा रूप धारण करके ज्ञान दिया, मनुष्य रूप से या आकाशवाणी से ? कृपया समाधान किया जाए ।

समाधान– ईश्वर ने मनुष्य रूप धारण करके वेदों का ज्ञान नहीं दिया। ईश्वर सर्वव्यापक है। सर्वव्यामक ईश्वर हमारे अन्दर है। वह चार ऋषियों के अंदर भी था। अन्दर ही अन्दर ईश्वर ने उनको सारा पाठ पढ़ा दिया । जैसे आप अभी भी आंख बंद करके बैठ सकते हैं। मन में अन्दर ही अन्दर सोचते रहिए, आपको बोलने जरूरत की नहीं, जुबान हिलाने की आवश्यकता नहीं। आप अंदर ही अंदर सारी बातें करते रहें। घंटों तक बैठे रहिए, चिंतन–मनन करते रहिए। ऐसे ही ईश्वर ने चार ऋषियों के अंदर ही अंदर सारी पिक्चर दिखा दी। और चारों वेद पढ़ा दिये।

जैसे– ऋग्वेद का यह सबसे पहला मन्त्र है–

ओ३म् अग्निमीके पुराहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधारतमम्।।

ईश्वर ने यह मन्त्र भी पढ़ा (सिखा) दिया। इसका अर्थ (शब्दानुसार) भी सिखा दिया। इसका पिक्चर (चित्र) भी दिखा दिया। क्योंकि बिना पिक्चर दिखाए व्यक्ति को अर्थ समझ में नहीं आता। आप छोटे–छोटे बच्चों को पढ़ाइए स्कूल में। ए फॉर ऐपल, बी फॉर बॉल। सी फॉर कैट, डी फॉर डॉल। न तो कैट दिखाइयेगा, न तो डॉल दिखाइयेगा। क्या उनकी समझ में आ जाएगा, कि ऐपल क्या होता है? आपको चार्ट दिखाना पड़ेगा, या प्रैक्टिकली ऐपल लाना होगा। 'ए' फॉर ऐपल होता है, वो तब समझ में आएगा। उसका फोटो भी बताना पड़ता है। उसे शब्द भी सिखाना पड़ता है। ईश्वर ने 'अग्निमीके पुरोहितम्' शब्द भी सिखा दिए, और आँख बंद करने पर पूरी फिल्म दिखा दी। अग्नि इसको बोलते हैं। स्तुति ऐसे की जाती है। इसी प्रकार से वेद के अन्य मन्त्रों के अर्थ भी चित्र सहित समझाये जैसे – देखो, खेती ऐसी की जाती है, ऐसे हल चलाया जाता है। इस तरह की पूरी फिल्म दिखा दी। उसको बोलते हैं– वेद का ज्ञान। ईश्वर अंदर ही वेद का ज्ञान दे देता है, मनुष्य रूप धारण नहीं करता ।

179. शंका– चारों युग की गणना कीजिए

समाधान– सबसे छोटा कलियुग है, जिसमें चार लाख बत्तीस हजार वर्ष, द्वापर युग में इससे दोगुने–आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष, त्रेता युग में इससे तीन गुना–बारह लाख छियान्नवे हजार वर्ष और सतयुग में इससे चार गुना–सत्रह लाख अट्ठाइस हजार वर्ष होते हैं। इन चारों को जोड़ देंगे, तो तैंतालीस लाख बीस हजार वर्ष हुए। यह एक चतुर्युगी हो गई। एक सृष्टिकाल में एक हजार चतुर्युगी होती हैं। तो इसको एक हजार से गुणा करेंगे, तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों की संख्या होती है। एक हजार बार इस सृष्टिकाल में चतुर्युगियों की पुनरावृत्ति (रिपीट) होती है। यह चारों युगों के वर्षों की उपयुक्त संख्या है।

180. शंका– जीवात्मा एक शरीर को छोड़ दे, तो दूसरे शरीर में जाने के लिए उसको कितना समय लगता है?

समाधान– उपनिषद् में लिखा है, कि एक कीड़ा अपने दो अगले पाँव उठाकर के ऐसे रख देता है और पीछे के पाँव उठा करके यूँ आगे चलता रहता है। जैसे वो अगले पाँव उठाकर यूँ चलता है, बस इतनी देर में जीवात्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है।

मोटे–तौर पर यह मानना चाहिए कि उसको बहुत ज्यादा देर नहीं लगती, क्योंकि हर आत्मा का कर्मों का बही–खाता (एकाउंट) तैयार ही रहता है।

– दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात)

शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली एवं महर्षि दयानन्द

● आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

प्रायार्चा–

शरद् ऋतु के कई पर्व है, उन पर्वो मे एक महत्त्वपूर्ण पर्व है **दीपावली** । पर्व का दीपावली नाम क्यों है? क्योंकि इस पर्व पर अविज्ञात काल से **दीपानाम अवली दीपावली** अर्थात् **दीपों की पंक्तियों को जलाने की सजाने की परम्परा हैं।**

दीप प्रजवलन का उद्देश्य

दीपों को प्रजवलित करने का उद्देश्य है मालिव्य को दूर करना, प्रकाश फैलाना। कार्तिक मास की इस अमावस्या की रात को वर्ष की बाहर अमावस्यायों में सधन अन्धकार होता है। अन्धकार प्रकाश का प्रतिलोम है। दीप जलाकव प्रकाश की ओर बढ़ने का संकल्प स्थापित किया जाता है जैसा कि वेद में कहा है–

आरोह तमसो ज्योतिः अथर्व. 9/1/9

अर्थात् **तमसः**–दुःख,अन्धकार आदि तमसों से ज्योति की ओर कदम रखें।

दीपों की पंक्ति को प्रजवलित करने का दूसरा उद्देश्य यह होता है कि वर्षाकालीन वातावरण से कीट,पतङ्ग आदि की वृद्धि होने से जो गृहों में तथा गृह के आस पास के पर्यावरण में हानिकारक, अस्वास्थ्यकर वायु का घेरा होता है, वह शुद्ध हो जावे। शुद्धि के लिए सरसों का तेल सर्वोत्तम तेल है, अतः ऋषि मुनियों ने दीपावली के दिन सरसों के तेल से दीप जलाने की परम्परा रखी है।

पर्व का मुख्य नाम शारदीय नवसस्येष्टि

कार्तिक मास की अमावस्या का शास्त्रीय नाम व मुख्यनाम शारदीय नवसस्येष्टि है।

हमारा देश ऋषियों और कृषियों का देश है। कृषि के माध्यम से जो अन्न उत्पन्न होता है, वह वर्ष में मुख्य दो फसलों के माध्यम से प्राप्त होता है। उस उत्पन्न अन्न को ऋषियों ने देवों का वरदान माना है, अतः यज्ञ में आहुति देकर भक्षण करने का विधान किया है। ऋषियों ने उन यज्ञों का नाम **वासन्ती नवसस्येष्टि–होलिका पर्व एवं शारदीय नवसस्येष्टि–दीपावली** रखा है।

दीपावलीपर्ववस्तुतः**नवसस्येष्टि–नवीन सस्य–फसल, खेती** के **इष्टि** यज्ञ करने का पर्व है। यज्ञ देकर खाने का नाम है। समाज आदान प्रदान से चलता है। मिलजुलकर होने वाला कार्य ही समाज का सबल बनता है। समाज को ये यज्ञ प्रीति, सद्भाव, संगठन, स्वच्छता की प्रेरणा देते हैं, समाज को उत्कृष्ट बनाते हैं।

धूम्र–धुआँ पर्व

अच्छाई और बुराई दोनों ही अनादि काल से विद्यमान हैं। कभी अच्छाई चरम सीमा पर रहती है, तो कभी बुराई। बुराई के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता, अच्छाई के लिए अति प्रयत्न करना होता है। बुराई अज्ञान के साये में पलती है, अच्छाई ज्ञान का परिणाम है।

अज्ञान के चलते आज लोगों ने पर्वो को, परम्पराओं को सड़ा, गलाकर रख दिया है। दीपावली पर्व पर जहाँ यज्ञों के सुगन्धित आहुतियों की ज्वालाओं के प्रकाश एवं जलती हुई समिधाओं के धूम्र से वातावरण को पूरित होना चाहिए, वहाँ आज के धूम्र से सम्पूर्ण वातावरण को भर दिया जाता है। इस पर्व को धूम्र पर्व बना दिया है, प्रदूषण पर्व कर दिया है। सभी भूल चुके हैं, कि यह पर्व प्रकाश व यज्ञ का पर्व है।

लोगों ने इस दीपों के पर्व को मोमबत्ती एवं बिजली के छोटे–छोटे रंग–बिरंगे बल्बों का पर्व बना दिया है। इतना ही नहीं जुआ, भांग, मद्य आदि का पर्व मान लिया है, यज्ञ करना छोड़ दिया है।

श्रीरामचन्द्र विजय की दन्त कथा

दीपावली पर्व पर दीपों की पंक्तियाँ प्रजवलित की जाती है। उन दीप अवलियों के प्रकाश की घटा बड़ी अद्भुत होती है। उस घटा के साथ श्रीरामचन्द्र वनवास से लौटकर अयोध्या आये थे, यह दन्त कथा लोगों ने जोड़ दी है, जो कि इतिहास के साक्ष्य से संगत नहीं होती क्योंकि वर्षा ऋतु तक सीता जी का अन्वेषणपता ही नहीं लग पाया था, तो विजय करके लौटना, कहाँ सम्भव है अस्तु।

नास्तिक से आस्तिक बनाने का पर्व

कार्तिक अमावस्या विक्रमी संवत् 1940, 30 अक्टूबर 1883 ई. मंगलवार को भी दीपावली का पर्व था। इस दिन आर्यसमाज के संस्थापक, वेद, वेदाङ्गवित्, वेद भाष्यकार भारत के सूर्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुआ था। स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण–इह लीला समाप्ति के अवसर पर लाहौर, अजमेर, उदयपुर आदि स्थानों से स्वामी जी के अनेक शिष्यगण पधारे थे, उनमें **पं.गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए** भी पधारे। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के लिए दयानन्द सरस्वती का प्रथम दर्शन था। पं. गुरुदत्त को इश्वर पर विश्वास नहीं था, नास्तिक विचार उन्हें घेरे हुए थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती कालकूट जहर देने के कारण 1 मास से असह्य वेदना से पीड़ित थे, अन्तर्दाह अत्याधिक था। चिकित्सा बहुत की गई, **डॉ. लक्ष्मणदास** आदि का श्रम निरर्थक गया। जब स्वामी दयानन्द अपना अन्तिम श्वास छोड़ रहे थे, उस समय उनकी अत्याधिक आनन्द मगन अवस्था थी। पं. गुरूदत्त उनकी यह स्थिति देख आश्चर्यकित रह गये। दयानन्द की इस आनन्दमग्न अवस्था ने पं. गुरूदत्त को दिव्य शक्ति के दर्शन करा दिये। नास्तिकता का अन्धकार छँट गया, दिव्य ज्योति का प्रकाश का आधान हो गया, पं. गुरूदत्त सदा के लिए आस्तिक बन गये। पं. गुरूदत्त आस्तिक मार्ग पर स्वयं तो

शेष पृष्ठ 08 पर

132 वें बलिदान-दिवस पर

विशेष क्रान्ति ही नहीं ऋषिवर, युगान्तरण तुमने किया

● प्रो. ओम कुमार आर्य उप-मंत्री

ईस्वी सन् 2015 तथा विक्रमी संवत 2072 का दीपावली-पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती का 132 वाँ निर्वाण-पर्व है, इसे महर्षि का बलिदान-पर्व कहना अधिक उपयुक्त है। महर्षि ने वेदों के उद्धार के लिये, समाज के सुधार के लिये, अपने अतीत कालीन भव्य गौरव एवं वैभव को पुनः प्राप्त करने के लिये तथा मातृभूमि को पराधीनता के पाश से मुक्त करवाने हेतु अहर्निश जो अनवरत संघर्ष किया और इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अंततो गत्वा आज से 132 वर्ष मातृभूमि की पावन बलिवेदी पर अपने प्राणों का उत्सर्जन किया उसको देखते हुये दीपावली-पर्व उनका निर्वाणोत्सव न होकर बलिदानोत्सव है। हमें इस अवसर पर उन महान् ईश्वर भक्त, वेदभक्त, गोभक्त एवं राष्ट्रभक्त सन्यासी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अवश्यमेव देनी चाहिये और साथ ही उनके प्रेरक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर अपने प्रिय राष्ट्र, जिसको कि धन की पैशाचिक भूख से ग्रस्त, भ्रष्टाचार की दल-दल में आपाद मस्तक डूबे सत्ता लोलुप राजनेता बर्बाद करने पर तुले हैं, को बचाने का उपाय करना है और उसके लिये समुज्वल भविष्य भी सुनिश्चित करना है। महर्षि के बलिदान-पर्व के अवसर पर उनके जीवन और कार्य पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। मैने ऊपर शीर्षक रूप में जो पंक्ति लिखी है- क्रान्ति ही नही ऋषिवर, युगान्तरण तुमने किया।

वह उनकी प्रशस्ति में लिखी किसी अनाम कवि की लघु कविता में से ली गई है। उक्त पंक्ति महर्षि के क्रांतिकारी कार्यो का थोड़े में ही सम्यक् बोध करवा देती है। किंचित् विस्तार से चर्चा करना आवश्यक है। महर्षि ने वास्तव में जो एक सर्वतो मुखी क्रांति की, उसको यदि हम सर्वतोभावेन समझ लें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि यह मात्र क्रांति ही नही थी अपितु महर्षि ने युगान्तर उपस्थित किया था। प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के पुनरूद्धारक, शुध्दि आन्दोलन के प्रवर्तक, आर्यजाति के निर्भीक प्रहरी और अपने युग के दिग्गज राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानंद के यशस्वी सुपंत्र स्व. इन्द्र विद्या वाचस्पति ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक भारतीय स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास में लिखा है कि उन्नीसवीं शताब्दी का पांचवा, छठा दशक भारत में नव जागरण, नवचेतना एवं राष्ट्रीय चेतना के नवोन्मेव को उषा काल था। यदि हम थोड़ रूककर महर्षि के जीवन की ओर देखें तो उनके जीवन को हम तीन भागों में बंटा पाते हैं-

क. गृहत्याग करने तक के प्रथम बीस वर्ष (1843तक)

ख. गृहत्याग के पश्चात् देश-भ्रमण गुरु विरजानन्द की कुटिया तक में लगे लगभग अठारह वर्ष (सन् 1860 तक)

ग. गुरु चरणों में बैठकर अध्ययन और पश्चात् बलिदान तक कार्यक्षेत्र में रहना (तेईस वर्ष 1883तक)

भारतीय नवजागरण के उषाः काल की अवधि महर्षि के देश भ्रमण और कार्यक्षेत्र में उक्त पुस्तक में इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं कि भारत मे जो लम्बे काल से अंधविश्वास ढोंग रूढिवाद, गुरुडम सामाजिक कुप्रथायें और धर्मिक पाखण्डादि चला आ रहा था उसको जड़ से उखाड़ फैकने में महर्षि दयानन्द की ऐतिहासिक भूमिका रही है। उन्हीं के शब्दों में "सन् 1857 की क्रान्ति के पश्चात् के उन महापुरुषों की सूची में जिन्हें हम उस क्रान्ति के मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्तराधिकारी कह सकते है, पहला नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती का है,

स्वामी जी का कार्यक्रम बहुत विस्तृत एवं संघर्षमय था। वह सर्वतोमुखी था। उन्होंने जिस योजना को कार्यान्वित किया, उसे क्रातिकारी, शब्द से विभूषित किया जा सकता है। उनकी सर्वतोमुखी क्रांति जिसके माध्यम से युगान्तर उपस्थित हुआ, वेद पर आधारित था। महर्षि दयानन्द विश्व ऐसे के एकमात्र युग-प्रवर्तक महापुरुष थे जिन्होने इस धारणा को पूर्णतः झुठला दिया कि अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के बिना कोई न तो प्रगतिवादी कहला सकता है न क्रान्ति ही संस्कृत दिया कि संस्कृत सब भाषाओं की जननी तो है ही, क्रान्ति को जन्म देने में भी सक्षम है। ऐसी सशक्त क्राति को जिसको कि युगान्तर कारी भी कहा जा सकता हैं।

शारीरिक दासता की समाप्ति के पश्चात् भी आज जो फिरंगियों के मानस पुत्रों की कपट नीति और कुकृत्यों के परिणाम स्वरूप देश में मानसिक, बौद्धिक, सास्कृतिक और शैक्षिक दासता आज भी बनी हुई हैं वैसी स्थिति तो महर्षि को पराधीनता के काल में भी स्वीकार नहीं थी। उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक शब्द में उनका स्वराज, स्वभाषा, स्ववेष स्वधर्म, स्वदेशी विषयक प्रेम कूट कूट कर भरा हुआ हैं। किसी ब्रिटिश प्रधान मंत्री का बीसवीं सदी का यह कथन कि good government is no substitute for self government महर्षि के इस कथन का अक्षरशः अनुवाद ही तो है-

कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है- ... माता -पिता के समान कृपा, न्याय सुखदायक नहीं हो सकता।

(सत्यार्थ प्रकाश)

महर्षि की यह क्रान्तिकारी घोषणा स्पष्ट तथा बताती है कि जिस धरती पर विदेशियों का राज्य है या विदेशी मूल का कोई व्यक्ति जिस देश की राज्य व्यवस्था में सीधी दखल रखता हो तो उस देश का सच्चा हित कभी नही हो सकता। वहाँ अशान्ति, अव्यवस्था, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, आपसी फूट आदि का होना स्वामाविक है। अतः हमें हर संभव प्रयास करके जन जन में स्वदेशी भावना भरनी चाहिये और विदेशी का बहिष्कार करना चाहिये। महर्षि केशवचन्द्र सेनादि से भी विमत इसलिये रखते कि वे उनका ब्रह्मसमाज (प्रार्थना समाज भी) अंग्रेजी, बाईबिल, ईसाइयत आदि में ही सुधार और क्रान्ति के बीच खोजते थे, उनकी दृष्टि में वेद, वैदिक धर्म, संस्कृत आदि दकियानूसी सोच और पिछड़ेपन के प्रतीक थे। महर्षि को यह हीन भावना, स्व के प्रति नफरत कदापि स्वीकार्य नहीं थी। कैप्टेन केशव चंद सेन और उनके साथियों का रास्ता अलग था, महर्षि का रास्ता अलग था। आगे के इतिहास ने निर्णय महर्षि के पक्ष में दिया।

महर्षि ने घोर संघर्ष किया, महाक्रान्ति की, युगान्तरण किया अर्थात् युग और युग की घिसी पिटी सोच को बदल कर रख दिया। जन्म परक जाति-प्रथा पर कुठाराधात, वर्ण व्यवस्था की पंरजोर वकालत, बाल विवाह बेमेल विवाह की कुरीति पर निर्मम प्रहार, बदली हुई परिस्थितियाँ में विधवा विवाह का समर्थन, स्त्री शिक्षा की हिमायत, धर्म के नाम पर किये जा रहे अत्याचार व अनाचार का प्रबल विरोध, विदेश यात्रा के पक्ष में विचार रखना, गोरक्षा पर जोर, विदेशी राज्य को उखाड़ फैकने का आह्वान, वेद ज्ञान पर सबका समान अधिकार, शुद्धि की प्रेरणादि यह सब मिलकर एक महाक्रान्ति अथवा युगान्तरण ही कहे जायेंगे इसमें कोई अतिशयोक्ति कहीं नही है, यह यथार्थोक्ति ही कही जायेगी।

महर्षि के युगान्तर कारी कार्यक्रम का बहुत ही निष्पक्ष एंव वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन जहाँ योगी अरविन्द घोष,राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' साधु टी. एल. वासवानी और एण्ड्रयू जैक्शन आदि देशी, विदेशी लेखकों और विचारकों ने किया है वहीं इस लेख को समाप्त करने से पूर्व दो और अग्रेंज/फेच्चे लेखकों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। वे दो नाम है-

1 ए. क्रिस्टीना एल्बर्स तथा 2. रोम्यां रोलां।

इन दोनों ने अपनी-2 लद्यु कृतियों में जो मुश्किल से 25-30 पृष्ठों की होगी, महर्षि दयानन्द के युग-परिवर्तक व्यक्तित्व को, परिवर्तन कारी विचारों को और उनकी वेद पर आधारित क्रान्ति को प्रमुख विषय बनाकर महर्षि का जो मूल्यांकन किया है, विश्व इतिहास में उनका स्थान निर्धारण किया है, भारत के नव जागरण में उनके ऐतिहासिक योगदान का उल्लेख किया है, उनकी बहुआयामी क्रान्ति का संक्षेप में ही जो अत्यंत प्रभावशाली एवं प्रभावोत्पादक वर्णन किया है वह सचमुच ही गागर में सागर भरने के समान है अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

ए. क्रिस्टीना एल्वर्स ने जो लद्यु पुस्तिका लिखी है उसे महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी शीर्षक दिया जा सकता है, यह एक काव्य-कृति है और सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक,विचारक के एवं दार्शनिक रोम्यांरोलां ने जो लिखी है उसको भी 'दयानन्द एक लद्यु जीवनी' नाम दिया जा सकता है।

उक्त दोनों ही लेखकों ने देश, धर्म और जाति की सीमाओं से ऊपर उठकर महर्षि के जीवन पर दृष्टि पात किया है और उनके युगान्तर कारी कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की है। चूंकि लेख का कलेवर मुझे आज्ञा नहीं देता, इसलिये दोनों लेखकों के दो-चार उद्धहरण ही मैं हिन्दी में अनुवाद करके दे रहा हूँ। उनकी दो- चार पंक्तियाँ उनकी मूल रचनाओं में महर्षि के प्रति कितने ऊंचे उदगार भरे होंगे।

मैने दो शब्दों पर जोर दिया है क्रान्ति तथा अधिक प्रचण्ड रूप गले सड़े क्रान्ति का विध्वंस नये विचारों का जन्म, युग की दशा में परिवर्तन अर्थात् युगान्तरण उपस्थित करना। उपर्युक्त दोनों लेखकों (इनमें एक महिला लेखिका है) ने महर्षि का वर्णन करते समय जिस अत्यंत उदात्त और उच्च स्तर की शब्दावली का प्रयोग किया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे महर्षि को अपने काल का महानायक महान् योद्धा, निर्भीक क्रांतिकारी और वैज्ञानिक सोच वाला धर्म गुरु मानते थे। ए. क्रिस्टीना एल बर्स ने प्रारंभ में ही कहा है कि महर्षि दयानन्द विराट व्यक्तित्व के धनी महान् अध्यात्म वेत्ता थें- Toweving giant of

शेष पृष्ठ 09 पर

प्रकाश की ओर

● प्रा. भद्रसेन

दीपमाला प्रकाश पर्व है, इसीलिए इस अवसर पर स्वच्छ, लिपेपुते भवनों पर रात को प्रकाश किया जाता है। प्रकाश स्पष्टतया सुनिश्चितता का आधार है और प्रतीक है, तभी तो कोई प्रकाश में ही कुछ करने में समर्थ होता है। अन्धकार में सदा भय, ठोकर, कार्य का अभाव ही बना रहता है। इसीलिए भारतीय शास्त्रों की भावना 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, के अनुसार आर्य समाज ने मानव जाति के सुख के लिए अन्धकार (अन्धविश्वास, अज्ञान, रूढ़िवाद) से प्रकाश की ओर ले जाने का सदा ही हर तरह प्रयास किया है।

प्रिय पाठको! आओ इस प्रकाश पर्व पर इतिहास के परिप्रेक्ष्य में विचार करें कि आर्य समाज ने मानव समुदाय को प्रकाश की ओर ले जाने का किस रूप में प्रयास किया है।

पूर्व पीठिका

जिस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की उस समय संसार में अनेक प्रचारक संगठन थे, जो अपने-अपने धर्मों के प्रचार-प्रसार में विरत थे और आज भी उनकी स्थिति स्पष्ट है। जैसे कि इतिहास से परिचित हर एक जानता है कि संसार के पुस्तकालय की सबसे पुरानी पुस्तक वेद है। वेद आर्य (हिन्दू) नाम से पुकारे जाने वालो के धर्म ग्रंथ है। वेदों की भाषा संस्कृत है, अन्य भाषाओं और संस्कृत भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि संस्कृत एक व्यवस्थित, प्राचीन भाषाओ पर अच्छा प्रभाव है। वेद और वैदिक वाड्मय का अन्य धर्मग्रंथो पर अनेक तरह का प्रभाव प्राप्त होता है।

वैदिक काल

वेदों को समझने-समझाने के लिए समय-समय पर एक विशाल साहित्य रचा गया। इस प्रकार ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्,छह वेदाङ्ग., दर्शन, स्मृति, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत, पुराण, वेद भाष्य, लौकिक काव्य ग्रंथ वेदों के भावों को व्यक्त करते है। वेदों का लक्षाब्दियों तक एकछत्र विचार प्रसार रहा।

चार्वाकमत

जैन-बौद्ध धर्म से पूर्व हमें स्पष्ट रूप से चार्वाक के विचारों की चर्चा मिलती है। वह किसी अलौकिक ईश्द्र के रूप मे स्वीकार करता है। उसकी दृष्टि से यह संसार अपने आप बन जाता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु के स्वभाविक मेल से ही आत्मा और सांसारिक पदार्थ बनते है। चार्वाक की दृष्टि से उंही बातों को मानना चाहिए, जो प्रकाश के समान स्पष्ट प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है। अतः मृतक श्राद्ध, यज्ञ में बलि से अलौकिक सिद्धि की प्राप्ति आदि बातें प्रत्यक्ष और सत्य सिद्ध नही होती। वेद में मांस खाने जैसी बातों का वर्णन वेदों को अच्छा सिद्ध नहीं करता।

जैन और बौद्धमत

आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व जैन धर्म प्रकाश में आया और इसके कुछ समय पश्चात् बौद्ध धर्म। इन दोनों धर्मो के चलने का एक कारण यह, कि उन दिनों यज्ञों में पशु पक्षियों की बलि दी जाती थी और ऐसे यज्ञों से स्वर्ग की प्राप्ति मानी जाती थी। जब इन दोनों धर्मो ने इसका विरोध किया तो उत्तर मिला कि यह वेद का विधान है और वेद ईश्वर का ज्ञान हैं। तब इन्होने ऐसे वर्णन करने वाले वेद तथा ईश्वर को भी मानने से इन्कार कर दिया।

इन दोनों धर्मो के पनपने का दूसरा कारण यह भी था कि वर्ण व्यस्था के नाम पर परस्पर जातपात, छुआछुत भरा ईष्या, द्वेष, घृणायुक्त सामाजिक व्यवहार चलता था। सामाजिक जीवन में इस आधार पर कुछ के लिए शिक्षा और धर्म के द्वार बन्द थे, वे प्रायः दुत्कारे जाते थे।

ईसाइयत और इस्लाम

आज से लगभग 1970 वर्ष पूर्व ईसाई धर्म चला जिसके अनुसार ईसा ईश्वर का विशेष बेटा है। उसको पैगम्बर माने बिना किसी की भलाई, मुक्त नहीं हो सकती। अतः बपस्तिमा लेकर, ईसा को देवदूत मानकर अपना ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ना चाहिए।

लगभग 1400 वर्ष पूर्व मुहम्मद (601) ने मुस्लिम धर्म की नींव रखी। यहां ईसा की तरह मुहम्मद पर ईमान लाना आवश्यक है। आज ये दोनों धर्म भारत में अपने पैर जमा चुके है जिनके मानने वालों की संख्या करोड़ो में है।

सिख मत

भारत के इतिहास में सिख धर्म का अपना एक स्थान है। खालसा पंथ की स्थापना दशम गुरू गोविन्द जी ने (1671) में की थी। जो गुरुनानक देव जी से लेकर दशम गुरू तक की विचारधारा को लेकर चलता हैं। गुरू ग्रंथ में स्पष्ट रूप से चार सौ बार वेद का नाम आया है और अनेकत्र वेद की प्रशंसा भरे वाक्य जहां मिलते हैं, वहां हजारों बार श्रीराम, कृष्णादि के नाम आए हैं। पुनर्जन्म, गोपूजा, नामस्मरण, भक्ति, तीर्थ जैसे ही मिलते है। हाँ, केवल दशम गुरुओं का विशेष महत्त्व और केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण रूपी पांच करार इस धर्म की मूलभूत पहचान हैं।

आर्य समाज

सच्चे शिव की खोज और मृत्यु को जीतने की तड़प को लेकर मूलशंकर (महर्षि दयानन्द) 1946 में घर से निकले थे। 14वर्ष जगह-जगह भटकने के बाद वे मथुरा में ब्रह्मार्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी के चरणों में पहुँचे। गुरु ने ढाई या तीन वर्ष पढ़ाने के बाद विदाई के समय महर्षि दयानन्द को आर्ष ज्ञान की ज्योति फैलाने का कार्य सौंपा। इसी प्रसंग में महर्षि ने 1863 से1874 तक भारत के एक बडे भू भाग में प्रचार कार्य किया और बहुत सारे साहित्य को पढ़ने तथा भारतीय जनता को समझने के बाद 1875 में आर्य समाज की स्थापना की

भारत के इतिहास में सिख धर्म का अपना एक स्थान है। खालसा पंथ की स्थापना दशम गुरू गोविन्द जी ने (1671) में की थी। जो गुरुनानक देव जी से लेकर दशम गुरू तक की विचारधारा को लेकर चलता हैं। गुरू ग्रंथ में स्पष्ट रूप से चार सौ बार वेद का नाम आया है और अनेकत्र वेद की प्रशंसा भरे वाक्य जहां मिलते हैं, वहां हजारों बार श्रीराम, कृष्णादि के नाम आए हैं। पुनर्जन्म, गोपूजा, नामस्मरण, भक्ति, तीर्थ जैसे ही मिलते है। हाँ, केवल दशम गुरुओं का विशेष महत्त्व और केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण रूपी पांच करार इस धर्म की मूलभूत पहचान हैं।

स्थापना की आवश्यकता

इस नये प्रचारक संगठन को बनाने का मुख्य हार्दिक भाव यही था कि सत्य का ग्रहण और असत्य को त्याग की अलख जगाकर सारे संसार को सुखी बनाना, संसार का उपहार करना। यह सत्य चाहे किसी का भी और कब का हो, उसको बिना पक्षपात के स्वीकार किया जाय तथा सभी के सभी प्रकार असत्य को छोड़ा जाय। कयोकि सत्य से ही सब कार्य सिरे चढ़ते है। इसीलिए 1877 में चांदपुर के मेले में सभी धर्मो को एक स्थान पर लाने का प्रयास महर्षि ने किया। सत्यार्थ प्रकाश जैसे अपने ग्रंथ मे एकादश समुल्लास के अन्त में एक जिज्ञासु के माध्यम से सभी धर्मो से जुड़ हुओं को कहा, कि आओ! केवल धर्म के रूप में उन्हीं (विद्या प्रचार, सत्य स्वीकार, संयम, चोरी न करना,ईमानदारी जैसी) बातों को लेकर चलें। जिनमें सभी सहमत है, अपनी अलग-अलग की बातों की डफली बजाना बन्द कर दें। दुकानदारी की भावना रखने वाले उनसे सहमत न हुए।

महर्षि के तर्क

महर्षि दयानन्द सरवस्ती ने ईश्वर को न मानने वालों से कहा, वालो से कहा, कि संसार रूपी कार्य से ईश्वर स्वतः सिद्ध हैं। हां, ईश्वर के नाम पर जो कल्पित, असंभव, प्रकृति या प्रत्यक्ष विरुद्ध बातें चला रहे है, आओ! केवल उनका ही विरोध करें। ठगों की चालाकियों को देखकर सच्चाई से मुंह न मोड़े। इसके साथ महर्षि ने बड़े जोरदार शब्दों में कहा कि आओ पहले यह जांच करें, कि वेदों में मांस, मदिरा सेवन, यज्ञों में पशुबलि देकर स्वर्ग प्राप्ति, मृतक श्राद्ध, जन्मना जात-पात का वर्णन है भी? यदि ये हानिकारक बातें वेद में नहीं हैं तो बिना परखे वेदो को नकारना नहीं चाहिए और तभी हम सभी के सत्य को स्वीकार करने वाले बन सकते है अतः महर्षि दयानन्द एकदम प्राचीन भारतीय साहित्य से नाता न तोड़कर उसकी सच्चाई को लेने की जहाँ बातें करते हैं, वहां वे स्पष्ट रूप से असत्य असम्भव, कल्पित, प्रत्यक्ष विरुद्ध बातों के बोझ को अपनेपन के नाम पर ढोने का समर्थन भी नही करते, अपितु उसको एकदम छोड़ने की बात करते हैं। महर्षि दयानन्द किसी बात की सिद्धि जहां शास्त्र के प्रमाणों से करते है, वहां युक्ति से उसका जबाव, व्यावहारिकता का ध्यान अवश्य रखते है। अतः महर्षि सुसंगत को स्वीकार करते है, जैसे कि जैन अहिंसा की इतनी अधिक दुहाई देते है, कि कृषि, सफाई की भी उपेक्षा करते है। ऐसी स्थिति में कृषि कार्य, सफाई न्यायालय के दंड विधान के बिना कैसे कार्य चल सकता है। तब अहिंसा अव्यावहारिक हो जाती है।

आर्य समाज की मान्यताएं

आर्य समाज सभी मानवों को यह संदेश देता है कि आधुनिक भाषाओं, धर्मो, देशों, प्रदेशों, जात पात के वर्गो के आधार पर मानवता को न बांटकर सभी के हित की सच्चाई को अपनाया जाय। अतः आर्य समाज का विचार है कि-

1.इस संसार की बनावट, व्यवस्था बताती हैं कि उसका कर्ता एक ही है अतः वह सर्ववयापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान है इसीलिए ऐसे एक ईश्वर को ही मानना चाहिए।

ईश्वर पूर्ण सत्य है, अतः उसकी बनाई व्यवस्थाएं प्राकृतिक पदार्थ भी सत्य हैं। ये जैसे है, वैसे ही स्वीकार करने चाहिए, इनमें किसी के प्रभाव कहने, पूजा से परिवर्तन नहीं आता। जैसे कि रेत खांड या खांड रेत नहीं बन जाती।

ईश्वर के कार्यो को जब कोई देवी देवता, पैगम्बर, अवतार, गुरू बाबा, माता, आदि नहीं कर सकता तो उनको ईश्वर का स्थान नहीं देना चाहिए और न ही ईश्वर के रूप में उनकी पूजा करनी चाहिए।

आर्य समाज की दृष्टि से हमें ईश्वर

शेष पृष्ठ 11 पर

'वेद और भाई–दूज का पर्व'

● मनमोहन कुमार आर्य

कार्तिक अमवस्या दीपावली के बाद शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन भाई दूज का पर्व देश भर में मनाया जाता है। यह पर्व भाई व बहिन के प्रेम, समर्पण, परस्पर रक्षा, सहयोग, सहायता, सेवा, शुभकामना, आवश्कता पड़ने पर एक दूसरे के लिए त्याग व बलिदान का प्रतीक है। इसका जब आधार खोजने का प्रयास किया गया तो इसका मूल व आधार हमें वेद में प्राप्त हुआ। वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है '**मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यंचः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।" वेद के इस मन्त्र में कहा गया है कि कोई भी अपने भाई के साथ कभी द्वेष न करें। कोई भी बहिन अपनी बहिन से द्वेष कभी न करे। बहिन–भाई भी परस्पर द्वेष न करें। सभी बहिन व भाई परस्पर प्रेम आदि गुणों से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें।** इसको इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि सभी भाई अपने भाइयों से हमेशा प्रेम करें व एक दूसरे का आदर व सम्मान करें। सभी बहिनें अपनी बहिनों से हमेशा प्रेम व सम्मानजनक व्यवहार करें। बहिन–भाई भी परस्पर प्रेम व सद्भावनापूर्ण व्यवहार करें। सभी बहिन व भाई द्वेष, स्वार्थ, अन्यमस्कता व शत्रुता आदि के व्यवहार का पूर्णतया त्याग करके परस्पर सच्चे हार्दिक प्रेम से पूर्ण सभी सद्गुणों आदि से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर **मंगलकारक रीति** से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें। **यह मंगलकारक रीति ही इस पर्व का आधारं प्रतीत होती है।**

आज समाज में देखा जाता है कि जब तक बच्चे छोटे होते हैं तो उनमें परस्पर प्रेम व स्नेह भरपूर होता है। बाल्यकाल में भाई से भाई, बहिन से बहिन तथा बहिन–भाई परस्पर त्याग भावना से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं और सबमें एक दूसरे के प्रति दृढ़ प्रेम बन्धन होता है। एक दूसरे के सुख में सुख व एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते हैं। परन्तु आयु बढ़ने के साथ बहिनों को भी और भाइयों को भी नई–नई समस्याओं से जूझना व गुजरना पड़ता है और परिवर्तित परिस्थितियों में ढलना पड़ता है। देश, काल व परिस्थितियों के कारण इन प्रेम सम्बन्धों में कुछ कमी सी अनुभव होने लगती है। युवावस्था में बहिन व भाई का विवाह होने के बाद नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। दोनों की ही पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। फिर सन्तानों के जन्म से जिम्मेदारियों में और वृद्धि होने से मनुष्य अपने सम्मुख उपस्थित समस्याओं व उनके निराकरण एवं समाधान के बारे में ही सोचता है। यह आवश्यक नहीं कि सभी व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति सदैव अच्छी ही रहे। उसे बहुत अधिक परिश्रम करना होता है। कुछ व अधिकांश मामलों में इतना कुछ करने पर भी सभी आवश्यकतायें व इच्छायें पूरी नहीं होतीं जिसका प्रभाव भाई–भाई, बहिन–बहिन तथा भाई–बहिन के सम्बन्धों पर पड़ता है। सबका परस्पर मिलना–जुलना कम व बन्द हो जाता है। ऐसी स्थिति में भाई व बहिन के सम्बध को बनाये रखने के लिए हमें लगता है कि "**भाई–दूज**" को पर्व या त्यौहार अपनी भूमिका निभाता है। इस दिन सरकारी विभागों में तो राजपत्रित या निर्बन्धित अवकाश भी होता है। अतः इसका लाभ उठाकर बहिन भाई के घर या भाई बहिन के पास जाकर परस्पर मिलकर, एक दूसरे के सुख व दुःख जानकर, परस्पर सहयोग कर, स्वादिष्ट भोजन व मिष्ठान्न आदि का से सेवन कर तथा भाई की ओर बहिन को सामर्थ्य के अनुसार वस्त्र, आभूषण, उपयोगी उपहार व कुछ धन देकर इस पर्व को मनाते हैं। हमें लगता है कि पूर्व काल में तो इस पर्व का अपना महत्व रहा ही है परन्तु आज की परिस्थितियों में इसका महत्व और अधिक हो गया है। इस दिन यदि बहिन व भाइयों में किसी कारण कुछ मनमुटाव होकर परस्पर दूरियाँ बढ़ गई हो, तो परस्पर समझदारी का परिचय देकर उन्हें भी दूर किया जा सकता है। अतः आज इस भैया–दूज के पर्व को मनाने में इसकी महत्ता, प्रासंगिकता व उपयोगिता अनुभव होती है और हमारा विचार है कि सभी पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे।

ईश्वर प्रदत्त वेद मन्त्र कह रहा है कि भाई भाई से, बहिन बहिन से और भाई व बहिनें परस्पर द्वेष न करें। इसका अर्थ कि यह सब अपने जीवनों में परस्पर प्रेम व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करें और इसी लक्ष्य की प्राप्ति व इसे स्थिर रखने के लिए ही भारतीय संस्कृति में इस पर्व की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया गया है। हमें लगता है कि आर्येतर देश व संसार के सभी अहिन्दुओं को भी इस पर्व की सार्थकता के कारण इसे मनाना व अंगीकृत करना चाहिये और "**देर आये दुरस्त आये**" की कहावत को चरितार्थ करना चाहिये। **वेदों के अनुसार जीवन सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए ही तो परमात्मा से मिला है। अतः इसी भावना से मनुष्यमात्र को इस पर्व को मनाना चाहिये।** इस पर्व को मनाने से समाज में प्रेम व सौहार्द में वृद्धि होगी और आसुरी प्रवृत्तियों में कुछ कमी आ सकती है। वेदमन्त्र में अगला सन्देश है कि **सभी बहिन व भाई परस्पर प्रेम आदि गुणों से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल व कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें।** वेदमन्त्र की यह शिक्षा आज के दिन आत्म निरीक्षण का अवसर प्रदान करती है। इस दिन सभी भाई बहिनों को वेद की इस शिक्षा पर विचार करना चाहिये कि क्या वह वेद की इस शिक्षा के अनुकूल व अनुरूप व्यवहार कर रहे है या नहीं। यदि नहीं तो इस शिक्षा के अनुसार अपने जीवन व व्यवहार में परिवर्तन व संशोधन करना चाहिये। हम समझते हैं कि 1अरब 96 करोड़ 8 हजार वर्ष पूर्व ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई यह शिक्षा आज भी प्रासंगिक, उपयोगी एवं व्यवहारिक है। इस दिन हमें अपने जीवन के लक्ष्य व साधनों से परिचित कराने वाले वेदों के अध्ययन का व्रत भी लेना चाहिये।

196चुक्खूवाला, देहरादून–248001
फोनः 09412985121

☞ पृष्ठ 05 का शेष

शारदीय नवसस्येष्टि...

चले ही, लाला लाजपतराय सदृश अनेकों जनों को भी आस्तिक बना दिया और वेदों से जोड़ दिया। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम क्षण में **अग्निना अग्नि समिध्यते** ऋ.1/12/6, ज्योति से ज्योति दीप्त होती है दीप से दीप जलाओ एक अन्धकार पराभूत हो जायेगा, यह शिक्षा दे डाली। इस शिक्षा ने एक क्रान्ति का शंख फूँक दिया।

महर्षि दयानन्द महत्व

संसार का उपकार शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति पर आश्रित होता हैं। महर्षि दयानन्द ने शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए वेद, संस्कार, संस्कृति, धर्म, तर्क, यज्ञ, उपासना आदि अनेकों ऐसे सम्बल दिये, जिससे संसार के सभी जन सुख समृद्धि को प्राप्त कर सकें, और धर्म आदि के नाम पर होने वाले पाखण्ड को उखाड़ सकें।

दीपावली के अवसर पर ऐसे देव पुरूष को ये पंक्तियाँ समर्पित हैं–

तुम जले तो भोर आया
तुम बुझे तो थी दीवाली।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय
वाराणसी उ॰ प्र॰

उर्वरक नगर बरौनी में श्रावणी उपाकर्म

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, एच.एफ.सी., उर्वरक नगर, बरौनी में श्रावणी उपाकर्म का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बेगूसराय जिले के गणमान्य आर्य विद्वान, वेद–प्रवक्ता आचार्य उमाकांत शास्त्री जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट हवन–यज्ञ का आयोजन किया गया। जहाँ प्राचार्य, शिक्षकों, छात्रों और अतिथियों ने प्रथम संस्कार विधि में लिखि हुई रीतियों से अग्निस्थापनादि करके निम्नलिखित द्वादश मंत्र से आहुतियाँ डाली।

हवनोपरांत आचार्य उमाकांत शास्त्री ने वैदिक धर्म में रक्षाबंधन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु में वेदों के ज्ञान का श्रवण किया जाता था अतः इस महीने का नाम श्रावण पड़ा। हमारी वैदिक संस्कृति में वेदों का पठन–पाठन श्रावण पूर्णिमा के दिन से होता था एवं इसी दिन गुरुओं के द्वारा शिष्यों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा जाता था इसी से रक्षाबंधन की शुरूआत हुई।

उद्देश्य समाज में प्रेम और भाई के संदेश को फैलाना है। छात्र–छात्राओं ने समवेत स्वर में वैदिक भजन प्रस्तुत किया। सभा की समाप्ति शांतिपाठ एवं जयघोष से की गई।

श्रावणी उपाकर्म

अगस्त तक आर्य समाज, ब्यावर के भजनोपदेशक पं. अमरसिंह वाचस्पति द्वारा आर्य समाज रिहाडी कॉलोनी जम्मू में वेद सप्ताह के सन्दर्भ में प्रभावी कार्यक्रम रखा। लोगों ने वाचस्पति के कार्यक्रम से प्रभावित होकर पूर्णाहुति पर ही कुलदीप जी गुप्ता प्रधान जी ने पुनः 8 से 11 अक्टुबर प्रचार हेतु आमंत्रित कर लिया। यहां के आचार्य विद्याभानु जी आचार्य , वेदपाठ श्री चैन लाल शास्त्री ने किया तथा प्रमुख प्रवक्ता योगी विदेह जी कुरूक्षेत्र थे।

वार्षिक समाचार

आर्य समाज, मानटाउन

प्रधान	डॉ. आर.पी. गुप्ता
उप प्रधान	प्रभाशंकर आर्य
मंत्री	राम जी लाल आर्य
कोषाध्यक्ष	सोमेशचन्द्र माहेश्वरी
पुस्तकाध्यक्ष	गोविन्द प्रसाद आर्य

आर्य समाज, सवाई माधोपुर

प्रधान	श्रीमती मनोहर देवी गुप्ता
उपप्रधान	श्रीमती अनिता दरगड़
मंत्री	श्रीमती ममता शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्रीमती नीलम माहेश्वरी

क्रान्तिकारी की डायरी का आँसुओं से भीगा एक पृष्ठ

● डॉ. सहदेव वर्मा

अधिक समय नहीं हुआ– जब उत्तर प्रदेश का एक छोटा सा कस्बानुमा नगर 'शाहजहाँपुर' देशभक्तों के लिये तीर्थ स्थान था। काकोरी केस को लोग आज भी भूले नहीं होंगे– उसका मूलोद्गम यही नगर था। उसके सबसे दृढ़ दो स्तम्भ पं. रामप्रसाद बिस्मिल और बाँका छैल अमर शहीद अशफाकुल्ला खाँ इसी उर्वरा धरती की देन हैं। इन दोनों के जीवन का सूर्यास्त एक ही दिन एक ही समय प्रातःकाल सैन्ट्रल जेल गोरखपुर तथा फैज़ाबाद की जेल में आततायी अंग्रेजों द्वारा हो गया, जिनकी यादगार आज भी रोमांचित कर देने वाली है। अस्तु–

इन्हीं जाँबाज़ बलिदानियों का एक साथी दोनों के परलोकगामी होने के पश्चात् उन देशद्रोहियों की तलाश में इधर–उधर भटक रहा था, जिन्होंने ऐन मौके पर मुखबिरी कर इन क्रान्तिकारियों के विरूद्ध गवाही देने का अक्षम्य अपराध किया था। इसी उधेड़बुन में वह शाहजहाँपुर पहुँचा, तो उसकी पहली इच्छा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की माँ के पैर छूने की हुई। यह वही नगर था, जहाँ वह न जाने कितनी बार वहाँ जा चुका था। पर आज तो वह स्थान सर्वथा अनजाना सा लगा। काफी धक्के खाने के और पूछताछ के पश्चात् एक छोटे से मकान की एक अंधेरी सी कोठरी में वह वीर प्रसविनी देवी अपने जीवन के अंतिम दिन गिन–गिन कर काट रही थी। इसे भाग्य की विडम्बना ही कहा जा सकता है। बिस्मिल का नाम सुनते ही लोग इधर–उधर कन्नी काट जाते थे, जैसे उन्होंने कुछ सुना ही न हो– उन्हें लगता था कहीं सी.आई.डी. का कोई बन्दा न हो, कौन आफ़त मोल ले।

उस अनजानी सी जगह जाकर संबंधित क्रातिकारी ने माँ के पैर छूकर उन्हें नमस्कार किया तो माँ ने बिना पहचाने ही (क्योंकि आँखों की रोशनी लगभग समाप्त हो चुकी थी) सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और काँपती सी आवाज में प्रेमपूर्वक पूछा– 'बेटा तुम कौन हो?' कहाँ से आये हो?' प्रेमभरे वचनों को सुनकर क्रान्तिकारी कुछ असमजंस की स्थिति में पड़ गया, क्या उत्तर दे? कुछ समझ नहीं पा रहा था। कुछ ही क्षणों के पश्चात् माँ ने फिर पूछा– 'कहाँ से आये हो बेटा?'

इस बार क्रान्तिकारी ने साहस के साथ अपना परिचय दिया। 'माँ जी आपको कुछ याद है, आप गोरखपुर जेल में किसी को अपना बेटा बना कर जब रामप्रसाद जी से अंतिम भेंट के समय पहुँची थी?"फिर क्या था उस बहादुर माँ के धीरज का बाँध टूट गया। प्रकाशहीन नेत्रों से न जाने कहाँ से, कैसे गंगा जमना बह चली। बार–बार माँ ने सिर पर प्रेम से हाथ फेरा– 'पर तुम इतने दिन कहाँ रहे? मैं तो तुम्हें बराबर याद करती थी। तुम्हारा आना भी तो एक दम बन्द हो गया। मैने तो समझा कि कहीं तुम भी रामप्रसाद के रास्ते पर तो नहीं....? कहते–कहते माँ का दिल भर आया। कुछ दिन पहले दबे अनेक घाव फिर हरे होकर टीस बन उभर आये।

बात का रूख मोड़ने के लिए क्रांतिकारी ने माँ जी से पूछा– 'माँ रमेश (बिस्मिल का छोटा भाई)' कहाँ है?' क्रान्तिकारी को क्या पता था कि यह प्रश्न उन ज्योतिहीन नेत्रों में सावन–भादों बन कर सैलाब का रूप धारण कर बैठेगा? वे ज़ार–ज़ार रो पड़ी। चिरकाल का बना बाँध फिर टूट पड़ा। पर धन्य है उस बहादुर माँ को– कुछ ही क्षणों में उन्होंने अपने आपको सम्हाला और बीते दिनों की आप बीती सुनाई।

'बेटा, रामप्रसाद के जाने बाद शुरू–शुरू में तो लोगों ने पुलिस के डर से उनके घर आना ही छोड़ दिया। बूढ़े पिता की आमदनी का तो कोई साधन ही नहीं था। कुछ ही समय बाद रमेश भी बीमार पड़ गया। घर का सब कुछ बिक जाने पर भी रमेश का इलाज न हो सका, उसे टी.बी. की बीमारी बताई, पर दो रूखी–सूखी रोटियों के लाले पड़े थे, घी दूध का प्रबन्ध तो दूर की बात थी। बेटा........ आखिर एक दिन अचानक तपेदिक का शिकार होकर वह भी इस माँ को निपूति छोड़कर चला गया।...... बेबस माँ पल्लू से आँखें पोंछती रही– आप बीती सुनाती रही। कलेजे पर पत्थर रखकर क्रांतिकारी भी सुनता रहा।..... और अन्त में जब माँ ने– न जाने–कैसे अपनी बात समाप्त करने का संकेत किया तो फिर जैसे भूचाल सा आ गया– यह बताने के लिये भी तो हिम्मत चाहिए। माँ ने कहा– बेटा घर का सब कुछ खाट–पीढ़ी चाकी–चूल्हा तो पहले ही बिक चुके थे। और एक दिन अचानक भूख–प्यास से निढाल होकर वे भी......!' .... पर बेटे चाहे जो भी हो– इस भूखे पेट में अनाज के दो दाने तो डालने ही थे। पेट से पट्टी बाँध कर मकान का एक भाग किराये पर उठाने का निश्चय किया। .... पर पुलिस के डर से कोई किरायेदार भी तो आने को तैयार नहीं हुआ। पर हाय री किस्मत! जब एक किरायेदार आया भी तो पुलिस का ही एक आदमी! लोगों ने अफ़वाह उड़ा दी, बदनाम करने में भी कोई कोर–कसर बाकी नहीं छोड़ी कि माँ का सम्पर्क तो पुलिस से हो गया है। इस बदनामी को सुनकर आँखों की रही–सही रोशनी भी चली गई। वैसे ही देखने को अब बचा भी क्या था? पुत्र खोया, लाल खोया और अन्त में जो नाम बचा था वह भी चला गया।' कहते–कहते माँ के हिचकी भरे शब्दों को सुनने की हिम्मत तो अब क्रान्तिकारी भी खो बैठा था।

24/4, बिशन स्वरूप कालोनी,
पानीपत (हरियाणा)
दूरभाष : 0180/2643700

☞ पृष्ठ 06 का शेष

132 वें बलिदान–दिवस...

the spirit Dayanand sarasvsati आगे चलकर लेखिका ने जोर देकर कहा है, कि नर नाहर (Lionhearted)दयानन्द ने घर इसलिये छोड़ा ताकि सत्य की खोज कर सके और अपनी दुर्दशाग्रस्त भारत भूमि के कष्टों का निवारण कर सके, वेद की सर्वोच्चता पुनः स्थापित कर सके। अपने गुरु से विदा लेते समय दयानन्द इसी प्रकार की प्रतिज्ञा के साथ कार्यक्षेत्र में उतरा था। नारी की दुर्दशा के विषय में लेखिका लिखती हैं–And where mothers live in bondage

Never grows a race to power and glovy.

क्रिस्टिना ने महर्षि के अछूतोद्धार कार्यक्रम, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धार, अंधविश्वास के नाश, राष्टीय चेतना को जगाना और पुष्ट करना, अन्याय के विरूद्ध बगावत, धर्म को वैज्ञानिक धरातल पर स्थापित करना, राष्ट्र में व्याप्त हीन भावनाओं को दूर करके राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्म–गौरव की भावना का संचार करना आदि पर बहुत ही संक्षेप में किंतु प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला हैं। महर्षि के देहावसान का तो लेखिका ने बहुत ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है और उनके श्रद्धालु अनुयायी की तरह कहा है कि आंसू मत बहाओ, उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का सकल्प करो–

Try to follow in this foot stops
Hear his message in the spirit
And Convey it to the many

इस प्रकार महर्षि के युगान्तर कारी व्यक्तित्व का चित्रण लेखिका ने किया है।

योम्या रो लांड (Romain Rolland) ने भी अपनी लघु पुस्तिका ''दयानन्द और आर्य समाज'' में इससे काफी कुछ मिलता जुलता सा शब्द–चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने भी प्रारंभ में जोर देकर कहा है कि 'योरप इस सिंह पुरुष (महर्षि) की उपेक्षा नहीं कर सकता। यह वह व्यक्ति था जिसके व्यक्तित्व में महान् कर्मयोगी दार्शनिक विचारक तथा एक प्रतिभा संपन्न जननायक के गुणों का दुर्लभ मिश्रण विद्यमान था। लेखक ने महर्षि के काशी शास्त्रार्थ' का उल्लेख किया है ढोंग के विरूद्ध उनकी सिंहगर्जना, दासता की बेड़िया काट डालने का उनका संकल्प विधवा, अनाथ अछूतादि की पीड़ा को समझ उनके उद्धार की तडप, भारत के पतन का दर्द, मातृ भूमि को पुनः जगद्‌गुरू के आसन पर बिठाने की उनकी तीव्र इच्छा उनका संघर्ष त्याग, बलिदान आदि पर बड़ी श्रद्धा और प्रशंसा भावना के साथ लेखनी चलाई है। और अंत में कहा है कि वह पुनर्जागरण और पुनःनिर्माण का बड़ा साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ योद्धा था (rdent prophet) वह अपने लक्ष्य के प्रति सतत् जारूक था (Kept the vigil) और उसका महान् लक्ष्य था अपनी पतनोन्मुख मातृभूमि का उत्थान, उद्धार विकास अपनी मातृभूमि का उत्थान, उद्धार विकास। अपनी मातृभूमि को गौरव की अतीत का लीग ऊंचाइयों पर फिर से आसीन करना। इस ऊंचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये महर्षि ने युगान्तर कारी कार्य किया, युगान्तरण करने का साहसपूर्ण अभियान चलाया, ही नहीं सफलता पूर्वक सिरे भी चढाया। प्रिय दीपावली के दिन अपने वैदिक धर्म और ऋषियों की जन्मदात्री भारत भूमि के लिये वह अपनी देह का दीपक बुझा गया किंतु एक ऐसा प्रकाश पुञ्ज (वेद) हमें दे गया जिसका प्रकाश युगों–2 तक मानवता का पथ–प्रदर्शन करता रहेगा। अंत में कवि के शब्दों में यही कहा जा सकता है–

विश्व को अमृत पिला, विष आचमन तुमने किया
देशहित तप, त्याग, संयम का चयन तुमने किया
देह को समिधा बना, और प्राणों को घृत
धन्य ऋषिवर धन्य, यूं जीवन –हवन तुमने किया
नवजीवन देने हमें, मृत्यु–वरण तुमने किया
ईश का सम्बल पकड़, वेदों को लेकर हाथ में
क्रांति ही नहीं ऋषिवर, युगान्तरण तुमने किया
युग–प्रवर्तन तुमने किया, युग परिवर्तन तुमने किया
वेदालोक पूरित सुखद युग का मंगलाचरण तुमने किया।

जवाहर नगर पटियाला चौक
जीन्द (हरियाणा)
09416294347

पत्र/कविता

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्योहार

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्योहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड, जिनका नहीं है कोई आधार।।

दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्योहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय , यही है "गीता का सार।।

दीपावली है अधर्म पर, धर्म की विजय का त्योहार ।
अन्य मतों को छोड़ वैदिक धर्म अपनाओ जो देता है आत्मा को आहार।।

दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्योहार ।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो सभी से ईमानदारी का व्यवहार।।

दीपावली है कूड़ा– कर्कट पर, सफाई की विजय का त्योहार।
कूड़े–कर्कट से करो सदा नफरत और सफाई से करो हमेशा प्यार। ।

दीपावली है हँसने और हँसाने और सब को प्रसन्न रखने का त्योहार ।
सब से रखो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार।।

अधिकतर लोग समझते हैं इसे रावण पर राम की विजय का त्योहार।
जो भी हो, इससे सीखें, कैसे आवे मेरे जीवन में राम के संस्कार।।

दीपावली का त्योहार हमें सिखलाता है सब से करना प्यार।
न कभी किसी पर जुल्म करो, न करो किसी से गलत व्यवहार।।

यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सबसे सद् व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया हमने सही अर्थों में दीपावली का त्योहार।।

दीपावली है बुराईयों को छोड़, अच्छाईयों को अपनाने का त्योहार।
कहता है " ,खुशहाल" इस सिद्धान्त को लो अपने जीवन में उतार।।

खुशहाल चन्दआर्य
180महात्मा गान्धी रोड़ (दोतल्ला)
कोलकत्ता –700007

सब सदस्यों को वैदिक धर्म की ही दीक्षा देनी होगी

सम्पादक महोदय आप अरार्य समाज के एक महान नेता हैं जब से आप डी.ए.वी. और आर्य प्रादेशक सभा के प्रधान बने हैं तब से इन सस्थाओं की बड़ी उन्नति हुई है।

डी.ए.वी. के स्कूल–कॉलेजों से लाखों व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और सफल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। महर्षि दयानंद ने अपने मन्तथ्यों में यह कहा था कि मैंने आर्य समाज को किसी नये मत अथवा पंथ के रूप में स्थापित नही किया। मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है जो ब्रह्मा से जैमिनी मुनि तक चलता आया है। उन्होंने 31 दिसम्बर 1880 को आर्य समाज मुलतान (अब पाकिस्तान) के मन्त्री मा. दयाराम समाज वर्मा को पत्र लिखा था कि आर्य समाज के लोग जनगणना में अपना धर्म वैदिक तथा जाति आर्य लिखाये। परन्तु आर्य समाज के नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया इसलिये अधिकांश परिवार भी आर्य समाजी नहीं वने जिस तरह एक ईसाई की सन्तान ईसाई और मुसलमान की मुसलमान ही होती है इस तरह आर्य समाजियों की सन्तानें आर्य समाज नहीं हैं क्योंकि आर्य समाज तो कोई धर्म अथवा मत नहीं है। आर्य समाज के सदस्यों द्वारा अपने को वैदिक धर्मी न लिखाने के कारण इनकी सन्तानें वैदिक धर्मी नहीं हैं। इसलिये आर्य सामजियों की संख्या घट रही है। केवल वैदिक धर्म की जय के नारे लग रहे हैं।

डी.ए.वी. कॉलेज अजमेर के भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री दत्तात्रय बावले ने यह कहा था कि अगर आर्य समाज को चिरकाल तक जीवित रखना है तो सब आर्य समाजियों को अपना धर्म वैदिक ही लिखना लिखाना होगा क्योंकि धर्म अथवा मत तो हमेशा चलते ही रहते हैं जबकि संस्थायें हमेशा नहीं चला करतीं।

अब कठनाई यह है कि लोग हिन्दु शब्द को छोड़ना नहीं चाहते जबकि यह नाम विदेशियों का दिया हुआ है परन्तु हमारा धर्म तो वैदिक है और प्राचीन नाम आर्य है। इसलिये धर्म तो वैदिक ही लिखना लिखाना चाहिये तभी हमारी सन्तान भी वैदिक धर्मी बनेगी। हिन्दुस्तान के निवासी होने के कारण हम हिन्दु भी कहलाते रहें।

समाज की प्रतिनिधि सभाओं को यह घोषणा करनी चाहिये कि हमारा धर्म वैदिक है। इससे ही आर्य समाज की उन्नति हो सकती है जब सन्तानें भी वैदिक धर्मी बनेंगी।

इसलिये आर्य समाजों के सब सदस्यों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी जानी चाहिये और सब सदस्यों की सन्तानें जो 18 वर्ष से अपर आयु की हों उन्हें आर्य समाज का सदस्य बनाना चाहिये। केवल हवन करने से ही कोई व्यक्ति आर्य समाजी नहीं बन जाता। वैदिक सिद्धान्तों को मानना और उनके अनुकूल आचरण करना भी आवश्यक है। आशा है कि आप विचार करेंगे और वैदिक धर्म की स्थापना करके सब को वैदिक धर्मी वनायेंगे। प्रतिनिधि सभा केन्द्रीय सरकार को भी सूचित करे कि आर्य समाज के लोग वैदिक धर्मी हैं।

91 वर्ष की अवस्था में भी आर्य समाज की उन्नति का यत्न कर रहा हूं।

अश्विनी कुमार पाठक
सी 233 नानक पुरा साउथ मोती बाग
नई दिल्ली 110021
फोन 26871636

****

मेला चांदापुर विषयक जिज्ञासा

परोपकारी' पाक्षिक के अक्टूबर (द्वितीय) 2015 अंक में प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने अपने लेख में लिखा है– **''मुसलमानों ने** ऋषि के सामने प्रस्ताव रखा कि हम और आप दोनों मिलकर गोरे पादरियों से टक्कर लें। परस्पर की बातचीत फिर हो जायेगी, पहले इनको हराया जाये।'' (पृष्ठ 13)

उपर्युक्त बात पढ़कर ऋषि दयानन्द के प्रमुख–प्रामाणिक जीवन चरित्र में दिया गया मेला चांदापुर का वृत्तान्त पढ़ने का मन हुआ। उनमें इस सम्बन्ध निम्नलिखित विवरण पाया–

1. पण्डित लेखराम जी संगृहीत स्वामी जी के जीवन चरित्र में लिखा है–''प्रथम **कुछ सज्जनों ने** स्वामी जी के डेरे पर जाकर यह कहा कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर पादरियों के मत का खण्डन करें। (पृष्ठ 296, 2007ई. संस्करण)
2. पण्डित लक्ष्मण जी लिखित स्वामी जी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र (कि जिसे स्वयं श्री जिज्ञासु जी ने अनूदित एवं सम्पादित किया है) में लिखा है– ''**कई लोगों ने** स्वामी जी के पास जाकर कहा कि आर्य और मुसलमान मिलके ईसाइयों का खण्डन करें तो अच्छा है।'' (भाग 1, पृष्ठ 482, प्रथम संस्करण 2012 ई.)
3. बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी संगृहीत स्वामी जी के जीवन चरित में लिखा है– ''**कुछ लोग** स्वामी जी के डेरे पर गये और यह प्रस्ताव किया कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर ईसाइयों का खण्डन करें।'' (पृष्ठ 355, वि. स. 2050 संस्करण)
4. श्री हरबिलास सारडा जी कृत स्वामी जी के अग्रेज़ी जीवन चरित्र में लिखा है–
   "On the 19th March, Some People went to Swami ji and suggested that the Hindus and Muslims shoul unite to refute Christianity. Swamiji said rather, all should meet together in love to find out the truth without prejudice and without attacking any one." (Life of Dayanand Saraswati, Page 167, Edition 1946)
5. डॉ. भवानीलाल भारतीय जी ने 'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' के पृष्ठ 284 पर लिखा है कि– ''कुछ लोगों ने स्वामी जी के निकट आकर यह प्रस्ताव किया कि हिन्दू और मुसलमान धर्माचार्यों को मिलकर ईसाई पादरियों को पराजित करना चाहिए।'' (पृष्ठ 284, 1883 ई. संस्करण)

उपर्युक्त सभी जीवन चरित्रों में स्वामी जी से उस बात को कहने वालों के लिए– ''**कुछ सज्जनों, कई लोगों, कुछ लोग, कुछ लोगों, some people**"- इत्यादि ही लिखा है। ''**मुसलमानों**'' ने यह बात स्वामी जी से कही, ऐसा तो किसी ने नही लिखा है।

अतः जिज्ञासा यह है कि जिन लोगों ने स्वामी जी के समक्ष उपर्युक्त प्रस्ताव रखा था, वे सब ''**मुसलमान**'' थे– ऐसा प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने किस ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर लिखा है?

श्री जिज्ञासु जी ने अपने इस विवेच्य लेख में दूसरी बात यह लिखी है कि–महर्षि ने कहा कि सत्य न स्वदेशी है **न विदेशी होता है**।'' स्वामी जी का यह कथन भी उपर्युक्त किसी भी जीवन चरित्र के 'मेला चांदापुर' विषयक प्रकरण में पढ़ने को नहीं मिला। मान्य जिज्ञासु जी ने यह कथन किस ग्रन्थ में से लेकर अपने इस लेख में उद्धृत किया है, यह पता नहीं चला।

भावेश मेरजा
8–17 टाउनशिप, पो नर्मदानगर, जि. भरुच, गुजरात–392015

****

अध्यात्मवाद (Spirituality)

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है– इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूंघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छुआ नहीं जा सकता।

परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद– 1–164–46) अर्थात् एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएं भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुख – ये छः गुण जिसमें हैं उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर प्रकाशित है, नहीं तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है।

आत्मा और परमात्मा– दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और न ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनका बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है।

आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्वव्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना– आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजेंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है वह हाथ–पैर आदि से नहीं करता क्योंकि उसके ये अंग हैं ही नहीं। वह सब कुछ इच्छा मात्र से करता है।

ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह सदा एक रस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग–द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपासना करने से अर्थात् उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है जैसे हम सुख–दुख मन में अनभुव करते हैं।

यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है तब वह कार्य करने में स्वतंत्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनियां या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती हैं या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती। इसलिए उन योनियों में की क्रियाओं की उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियां हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोग रही हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्म फल भी भोगता है।

मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख–दुख आत्मा को होता है।

जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुल्लिंग है और न ही नपुंसक लिंग है। यह जैसा जैसा शरीर पता है, वैसा–वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद।)

ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती जैसे मनुष्यों की पूजा अर्थात् सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात् सत्य और न्याय का आचरण ही ईश्वर की पूजा है।

कठ उपनिषद में मनुष्य शरीर की तुलना घोड़ा गाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात् सवार है। बुद्धि–सारथी अर्थात् कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियां घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मा रूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा जब बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रख के इन्द्रियां रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा।

उपनिषद में घोड़ा गाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है तब शरीर अरथी रह जाता है।

परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। वह सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है। और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है। वह भी परमात्मा की तरफ से ही होता है।

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
दूरभाषः 095014–67456

☞ पृष्ठ 07 का शेष

प्रकाश की ओर

की पूजा, भक्ति, कृतज्ञता, धन्यवाद के रूप में करनी चाहिए। जिससे भक्त भगवान से जुड़कर आत्मबल, निडरता प्राप्त कर सके। ईश्वर भक्ति, नामस्मरण, जाप, पूजापाठ, यज्ञ, तीर्थ, व्रत का अभिप्राय पवित्रता की प्रेरणा देना, हृदय शुद्धि हैं।

हां अवतार, गुरु आदि केवल मार्ग दर्शक अगुआ ही हैं इनको इसी रूप में ही आदार देना चाहिए, न कि ईश्वर जैसी पूजा, भक्ति, स्तुति होनी चाहिए।

2. सारी मानव जाति शरीर हार्दिक भाव की दृष्टि से जब एक सी है तो किसी विशेष कुल में जन्म के आधार पर किसी को अच्छा–बुरा न माना जाए। किसी के केवल वैश्य, शुद्र, श्रमजीवी, महिला होने से उसको हल्का समझकर घृणा न की जाय। सभी को प्रगति का समान अवसर देने के लिए शिक्षा, धर्म, आजीविका का समान अवसर देना चाहिए, फिर जिसकी जैसी योग्यता, क्षमता हो, उसको वैसा स्थान, पद आदर देना चाहिए। सामाजिक संगठन की दृष्टि से सभी को अपनत्व मिलना चाहिए, अन्यथा दुर्व्यवहार और अपमान से दुत्कारा गया व्यक्ति सामाजिक संगठन के लिए घातक, उदासीन सिद्ध हो सकता है। हमारे इतिहास में ऐसी अनेक घटना रोंगटे खडी करने वाली घटी है।

3 धर्म भलाई, अच्छाई की राह का नाम हैं। राह पर चलने से ही यात्री लक्ष्य तक पहुंचता हैं। चलने की सुविधा की दृष्टि से वहां नाम पटट, बोर्ड, संकेत लगाए जाते है। अतः धर्म आचरण की चीज है। नाम जप, पूजापाठ, तीर्थ, सत्संग सीधी राह पर चलने की प्रेरणा देने के लिए सड़क के बोर्डो की तरह है। ये अपने आप में स्वतंत्र धर्म की पहचान है। तभी तो कहा जाता है "दया धर्म का मूल है" और "पर हित सरस धर्म नहीं भाई" ऐसी बातें बताने से कोई धर्म ग्रंथ कहलाता है।

धर्म के नाम पर होने वाले अन्याय, शोषण, अत्याचार, अन्धविश्वास को देखकर आर्य समाज धर्म को नकारता नहीं, अपितु उन–उन बुराईयों को ही हटाने की बात करता है।

हां, आज भारतीय को महत्त्व देते हुए भी ब्रह्मकुमारी, राधास्वामी आदि अनेक वेद को पूरी तरह से भुला देना चाहते हैं, पर आर्य समाज नए और पुराने ग्रंथों को नकारता नहीं, अपितु सत्य के आधार पर जांचता हैं।

4. जहां हम रहते हैं, वहां उस देश, समाज में उसकी आज तक की प्रगति के लिए शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन आदि क्षेत्रों में मानवता की भलाई के लिए अनेकों ने कार्य किया है। जिसने भी पर हित के लिए जैसा भी कार्य किया है वह तदनुरूप हमारे आदर का पात्र है। वह उतना उतना महापुरूष है, मार्ग दर्शक है। पर हां, उनको ईश्वर के रूप में नहीं लेना चाहिए।

इन विचारो से स्पष्ट होता है कि आर्य समाज के विचार प्रकाश की तरह स्पष्ट और सुनिश्चित है, अर्थात आर्य समाज उन्हीं मान्यताओं को मानता है तथा किसी बात को उसी रूप में मानता है जो सर्वधा स्पष्ट और सुनिश्चित होती है। इस प्रकाश पर्व पर प्रकाश करने वालों और प्रकाश के महत्त्व को अनुभव करने वालों को आर्य समाज यह प्रेरणा देता है कि स्पष्टता, सुनिश्चितता के प्रतीक या आधार प्रकाश पर्व को मनाते हुए हम सोचें कि क्या हमारी हर बात, क्रिया स्पष्ट तथा सुनिश्चित है या नहीं? अर्थात मननशील मानव होने से हमें स्पष्ट, सुनिश्चित को ही अपनाना चाहिए। हां, यह सर्वथा प्रमाणित बात है कि रास्ते, ढग के स्पष्ट, सुनिश्चित होने से उस पर चलकर प्रत्येक मंजिल पर पहुंच सकता है। तभी तो कहा है–

गलत राह पर चलकर मंजिल,
मिलती नहीं किसी को।
लेकिन कोई नहीं भटकता,
सही राह पर चलकर।।
(विजय निबंध)

पूर्व किए गए ऐतिहासिक तुलनात्मक विवेचन से यह भी स्पष्ट होता है कि जिस किसी धर्म, दर्शन में जो–जो सुधार की बात (सत्य) है, बिना ननु नच के आर्य समाज सहर्ष उसको शास्त्रों की मूल भावना के अनुकूल मानता है। हां प्रकाशित शब्द अनेक सुधार के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

इन सारे विवेचन का सारांश यह है कि महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाए गए स्पष्ट, सुनिश्चित सिद्धान्तों को ही आर्य समाज प्रचारित करके प्रकाश की ओर चलने, प्रकाश में जीने की जहां भावना देता है, वहां सुधार की सारी बातों को जीवन में ढालने के लिए सदा तत्पर रहता है।

शालीमार नगर
होशियारपुर–146020(पंजाब)

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 04-05 \11 \2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39 \57

डी.ए.वी. सैंटेनरी पब्लिक स्कूल नाभा में ''वेद प्रचार सप्ताह''

डी.ए.वी. सैंटनरी पब्लिक स्कूल नाभा में द्वारा ''वेद प्रचार सप्ताह'' का आयोजन किया गया।

''वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इस कथन को पूरा करते हुए विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सात दिन तक नाभा शहर के तथा आस-पास के गांवों में वेद ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। पहले दिन विद्यार्थियों ने नाभा शहर के सीनियर सिटिजन वैलफेयर एसोशिएशन में यज्ञ सम्पन्न किया जहां छात्रों ने वहां के सदस्यों से मिलकर ज्ञानवर्धक चर्चा की तथा साथ ही वृद्धों की सेवा व सत्कार करने का वचन लिया। दूसरे दिन नगर की आर्य समाज मन्दिर में यज्ञायोजन कर प. दिनकर आर्य जी ने सुमधुर भजनों के द्वारा वेदों के महत्व को समझाया। इसी

प्रकार विद्यालय द्वारा अमरगढ़, राजगढ़, मंढौर आदि गांवों में छात्रों के अभिभावकों के साथ मिलकर व अन्य गांववासियों के साथ मिलकर हवन यज्ञ किया। जिसे विद्यालय में नियुक्त श्री रोहित शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाया जाता। विद्यालय के छात्र सस्वर वेद मन्त्रों का पाठ करते साथ ही बच्चों अध्यापकों व शहर के गणमान्य लोगों द्वारा आहुतियां प्रदान की जाती थी। तत्पश्चात् वेद के ज्ञान को लोगों तक पहुँचाया जाता था। अन्तिम दिन विद्यालय में श्रावणी पर्व व संस्कृत दिवस का आयोजन यज्ञ द्वारा किया गया। सभी को श्रावणी पर्व के महत्व को बताया तथा संस्कृत भाषा के विस्तार व उसके द्वारा उत्पन्न अन्य भाषाओं के बारे में बताया। प्रतिदिन यज्ञ के बाद सभी में प्रसाद वितरण कर शान्ति पाठ के बाद सबका धन्यवाद किया जाता।

प्राचार्या ने बताया कि इस वेद प्रचार का मुख्य उद्देश्य सामान्य जनमानस तक वेदों के विशिष्ट ज्ञान को पहुंचाना है। बच्चे इसमें मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। वे वेद ज्ञान को अपने माता-पिता व अन्य लोगों तक पहुँचाने का सबसे अच्छा साधन हैं। प्रधानाचार्या जी ने सभी अभिभावकों से अनुरोध किया की वे अपने बच्चों पर पूरी एकाग्रता से ध्यान दें ताकि बच्चे सही रास्ते पर चलते हुए माता-पिता का नाम रोशन करें।

डी.ए.वी. कॉलेज फिरोज़पुर में नैशनल डिज़ाज्स्टर पर प्रदर्शनी एवम् प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

स्वामी दयानन्द जी के मानवता के प्रति सेवाभाव से प्रेरणा लेकर प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया के मार्गदर्शन में 7 बीएन, नैशनल डिज़ाज्स्टर रिस्पांस फोर्स, बठिंडा द्वारा कॉलेज प्रांगण में प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा हेतु एक प्रदर्शनी एवम् प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इसका नेतृत्व श्री पिंटू यादव आइ. एन. एस. पी/ जी डी ने अपनी टीम सहित किया। प्राचार्या डॉ. वालिया ने श्री पिंटू यादव व उनकी टीम का अभिवादन करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण शिविर स्वामी दयानन्द जी के अमर संदेश 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' सब सुखी हों, सब खुश रहें व एक दूसरे की सहायता करें, को समर्पित है। तत्पश्चात्

श्री पिंटू यादव ने प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि भूकम्प, चक्रवात, बाढ़ तथा सुनामी इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इसके लिए मानव द्वारा अपने सुख के लिए प्रकृति से हस्तक्षेप को मुख्य कारण बताया। उनकी टीम ने अपने प्रदर्शन से भूकम्प का दृश्य उपस्थित कर एन.डी.आर.एफ. द्वारा दी जाने वाली सहायता का सजीव प्रदर्शन कर सबको अचम्भित कर दिया। उस अद्भुत प्रदर्शन को देखकर डॉ. वालिया ने उनके जज़्बे व बहादुरी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। डॉ. वालिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक तरफ हम लोग हैं जो संकट की आहट पाते ही अपने परिजनों को उस क्षेत्र में जाने से रोक लेते हैं, जबकि दूसरी तरफ एन.डी.आर.एफ. के सदस्य हैं जो अपने परिजनों को उस क्षेत्र में जाने से रोक लेते हैं जबकि दूसरी तरफ एन डी आर एफ के सदस्य हैं जो अपने प्राणों पर खेलकर हमारी रक्षा करते हैं। यह प्रशिक्षण शिविर एवम् प्रदर्शनी कॉलेज प्रांगण में लगायी गयी। कॉलेज के समस्त स्टाफ व छात्राओं ने इसमें भाग लिया।

डी.ए.वी. विद्यालय, जीन्द (हरियाणा) के नए कीर्तिमान

डी.ए.वी. विद्यालय जींद में माननीय प्राचार्य महोदय श्रीमान हरेश पाल पांचाल जी की अध्यक्षता में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक गतिविधियों का आयोजन होता रहता है. जिनमें प्रतिभागिता करके विद्यालय के बच्चे जिला स्तर, जोनल स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन कर स्थान बनाते हुए विद्यालय का व अपने अभिभावकों का नाम रोशन करते हैं। इन्हीं के तहत सी.बी.एस.ई. द्वारा मई मास में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता करवाई गई थी जिसका विषय **"तम्बाकू के दुष्प्रभाव"** था। उपरोक्त प्रतियोगिता में विद्यालय की कक्षा दसवीं की छात्रा ऋतिका ने "राष्ट्रीय स्तर" पर चुने गए 30 श्रेष्ठ निबन्ध लेखन में स्थान बनाया, जो कि विद्यालय व हिन्दी विभाग के लिए अति गौरव का विषय है।

विभिन्न गतिविधियों के तहत ही **"शिक्षा विभाग हरियाणा"** द्वारा आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यालय की कक्षा आठवीं की छात्रा तनिषा ने "ग्रीन हाऊस इफैक्ट" विषय पर मॉडल तैयार किया जो अब जिला स्तर पर चयनित होकर, स्टेट लैवल के लिए चुनी गई है। उपरोक्त सफलता पर विद्यालय प्राचार्य श्रीमान हरेशपाल पांचाल जी ने छात्रा को व विज्ञान विभाग को बधाई देते हुए अगले लेवल हेतु शुभकामनाएं दी। इस प्रकार डी.ए.वी. विद्यालय जींद सर्वोमुखी विकास की ओर अग्रसर है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - **पूनम सूरी**